LATEST EDITON

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान 3rd ग्रेड

(REET मुख्य परीक्षा हेतु)

1 LEVEL

HANDWRITTEN NOTES

भाग-1 राजस्थान का भूगोल + इतिहास + संस्कृति + भाषा

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान 3rd ग्रेड

REET LEVEL -1

मुख्य परीक्षा हेतु

भाग – I

राजस्थान का भूगोल + इतिहास + संस्कृति + भाषा

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान 3rd ग्रेड (REET मुख्य परीक्षा लेवल – I हेतु)** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर (RSMSSB)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"राजस्थान 3rd ग्रेड (REET मुख्य परीक्षा लेवल – I)" की** परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें /*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302017 (RAJASTHAN)

मो : 01414045784, 8233195718

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Online Order Link - https://bit.ly/I1-3rd-grade-notes

Whatsapp Link - https://wa.link/hx3rcz

Contact us at - 9694804063 + 8233195718

मूल्य : ₹	संस्करण : नवीनतम (2022)

राजस्थान का भूगोल

1. स्थिति एवं विस्तार	1
2. राजस्थान का भौगोलिक स्वरूप	13
3. मानसून तंत्र एवं जलवायु	24
4. (अपवाह तंत्र) - नदियाँ, झीलें एवं बाँध	27
5. राजस्थान की वन संपदा	50
6. वन्य जीव-जंतु वन्य जीव संरक्षण एवं अभ्यारण्य	54
7. मृदाएँ एवं मृदा संरक्षण	56
8. राजस्थान की प्रमुख फसलें	59
9. जनसंख्या, जनसंख्या-घनत्व, साक्षरता, और लिंगानुपात	66
10. राजस्थान की जनजातियाँ एवं जनजातीय क्षेत्र	79
11. धात्विक एवं अधात्विक खनिज	83
12. राजस्थान के ऊर्जा संसाधन : परम्परागत एवं गैर परम्परागत	90
13. राजस्थान के पर्यटन स्थल	101
14. राजस्थान में यातायात के साधन	108
15. पशुधन एवं पशु मेले (एक्स्ट्रा)	120

इतिहास एवं संस्कृति

1. राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएँ	124
• कालीबंगा , आहड़, गणेश्वर, बालाथल और बैराठ	
2. राजस्थान की महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाएँ, प्रमुख राजवंश	132
3. प्रशासनिक व राजस्व व्यवस्था	187

4. राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व 196
5. 1857 की क्रांति में राजस्थान का योगदान 212
6. राजस्थान में जनजाति एवं किसान आंदोलन 221
7. प्रजामण्डल 236
8. राजस्थान का एकीकरण 247

कला एवं संस्कृति

1. राजस्थान की स्थापत्य कला, किले स्मारक इत्यादि 253
2. राजस्थान के मेले एवं त्यौहार 264
3. लोक कला, लोक संगीत 275
4. लोक नाट्य एवं लोक नृत्य 280
5. राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा एवं विरासत 288
6. राजस्थान के धार्मिक आंदोलन प्रमुख संत एवं सम्प्रदाय 299
- राजस्थान के महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल 306
7. लोक देवता एंव लोक देवियाँ 307
8. राजस्थान के वस्त्र एवं आभूषण 314
9. राजस्थान की चित्रकलाएँ एवं हस्तशिल्प 316

राजस्थानी भाषा

1. राजस्थान की क्षेत्रीय बोलियाँ 324
2. प्रमुख राजस्थानी कृतियाँ एवं प्रमुख राजस्थानी साहित्यकार 326
3. राजस्थनी संत साहित्य एवं लोक साहित्य 331

राजस्थान का भूगोल

अध्याय – I

स्थिति एवं विस्तार

राजस्थान का विस्तार -

राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार 23°3" से 30° 12" उत्तरी अक्षांश ही तक है जबकि राजस्थान का देशांतरीय विस्तार 69°30" से 78°17" पूर्वी देशांतर है।

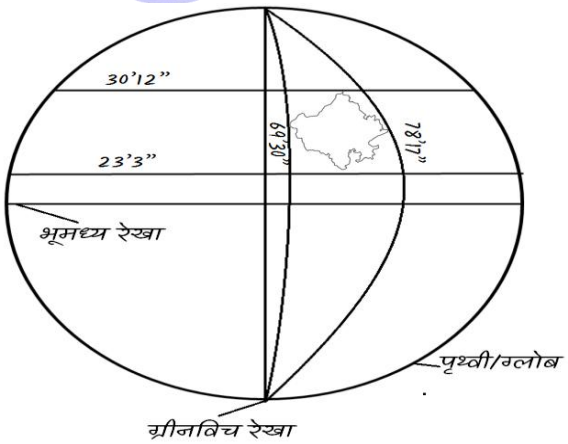

नोट :- राजस्थान का कुल अक्षांशीय विस्तार **7° 9"(30°12" 23°3")** है तथा कुल देशांतरीय विस्तार **8°47" (78°17" 69°30")** है।

1° = 4 मिनट

1° =111.4 किलोमीटर होता है।

अक्षांश रेखाएँ :- वह रेखाएँ जो ग्लोब पर पश्चिम से पूर्व की ओर बनी हुई हैं, अर्थात भूमध्य रेखा से किसी भी स्थान की उत्तरी अथवा दक्षिणी ध्रुव की ओर की कोणीय दूरी को अक्षांश रेखा कहते हैं। भूमध्य रेखा को अक्षांश रेखा माना गया है। (देखें मानचित्र-I)

ग्लोब पर कुछ अक्षांशों की संख्या (90 डिग्री उत्तरी गोलार्द्ध में और 90 डिग्री दक्षिणी गोलार्द्ध में) कुल 180 डिग्री है तथा अक्षांश रेखा को शामिल करने पर इनकी संख्या 181 होती है।

देशांतर रेखाएँ :- उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव को मिलाने वाली 360 डिग्री रेखाओं को देशांतर रेखाएँ कहा जाता है। ग्रीनविच, जहाँ ब्रिटिश राजकीय वेधशाला स्थित है, से गुजरने वाली यामोत्तर से पूर्व और पश्चिम की ओर गिनती शुरू की जाए। इस यामोत्तर को प्रमुख यामोत्तर कहते हैं। इसका मान देशांतर है तथा यहां से हम 180 डिग्री पूर्व या 180° डिग्री पश्चिम तक गणना करते हैं।

- राजस्थान का कुल क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग किलोमीटर है, जो कि संपूर्ण भारत का 10.41% है। भारत का कुल क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किलोमीटर है जो संपूर्ण विश्व का 2.42% है।
- 1 नवंबर 2000 से पूर्व क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य मध्यप्रदेश था। लेकिन 1 नवंबर 2000 के बाद मध्यप्रदेश से छत्तीसगढ़ को अलग हो जाने पर भारत का सबसे बड़ा राज्य क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान बन गया।
- 2011 में राजस्थान की कुल जनसंख्या 6,85,48,437 थी, जो कि कुल देश की जनसंख्या का 5.67% है।
- ***कर्क रेखा राजस्थान में स्थित :-***

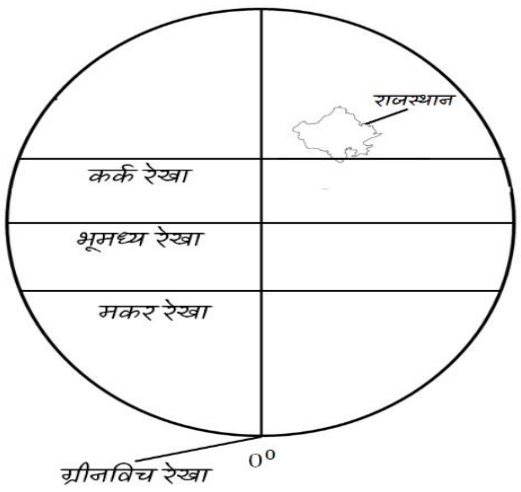

कर्क रेखा भारत के 8 राज्यों से होकर गुजरती है-

1.गुजरात 2.राजस्थान 3.मध्यप्रदेश 4.छत्तीसगढ़ 5.झारखंड 6. पश्चिम बंगाल

7.त्रिपुरा 8.मिजोरम

राजस्थान में कर्क रेखा बाँसवाड़ा जिलें के मध्य से कुशलगढ़ तहसील से गुजरती है। इसके अलावा कर्क रेखा डूंगरपुर जिलें को भी स्पर्श करती है, अर्थात् कुल दो जिलों से होकर गुजरती है।

राजस्थान में कर्क रेखा की कुल लंबाई 26 किलोमीटर है। राजस्थान का सर्वाधिक भाग कर्क रेखा के उत्तरी भाग में स्थित है।

राजस्थान का कर्क रेखा से सर्वाधिक नजदीकी शहर बाँसवाड़ा है।

भूमध्य रेखा पर सूर्य की किरणें सर्वाधिक सीधी पड़ती हैं, अतः वहां पर तापमान अधिक होता है। जैसे-जैसे भूमध्य रेखा से दूरी बढ़ती जाती है वैसे-वैसे सूर्य की किरणों का तिरछापन बढ़ता जाता है और तापमान में कमी आती जाती है।

राजस्थान में बाँसवाड़ा जिलें में सूर्य की किरणें सर्वाधिक सीधी पड़ती है जबकि गंगानगर में सर्वाधिक तिरछी पड़ती है।

कारण :- बाँसवाड़ा सर्वाधिक दक्षिण में स्थित है, तथा श्रीगंगानगर सबसे उत्तर में स्थित है।

राजस्थान की भौगोलिक स्थिति के अनुसार राज्य का सबसे गर्म जिला बाँसवाड़ा होना चाहिए, एवं राज्य का सबसे ठंडा जिला श्रीगंगानगर होना चाहिए, लेकिन वर्तमान में राज्य का सबसे गर्म व सबसे ठंडा जिला चूरु है। यह जिला सर्दियों में सबसे अधिक ठंडा एवं गर्मियों में सबसे अधिक गर्म रहता है इसका कारण यहां पाई जाने वाली रेत व जिप्सम है।

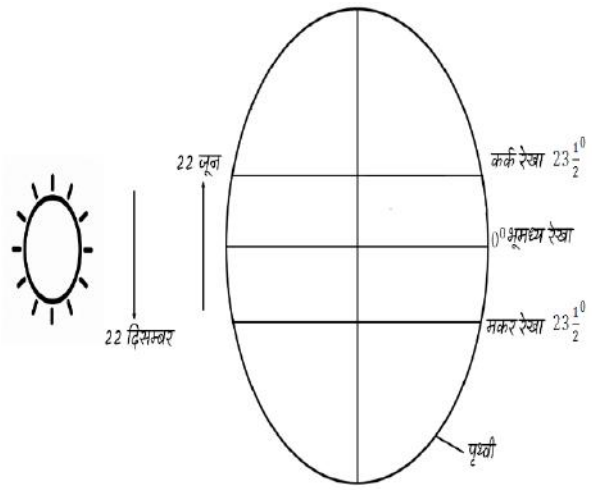

(निम्न मानचित्र को ध्यान से समझिए) -

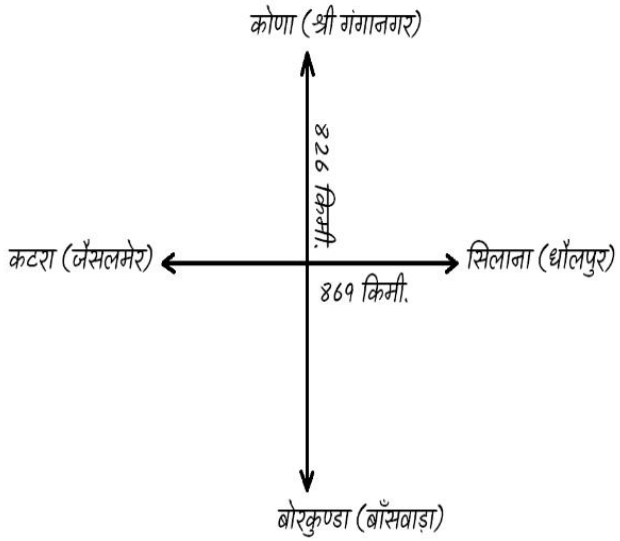

पूर्वी देशांतरीय भाग सूर्य के सबसे पहले सामने आता है, इस कारण सर्वप्रथम सूर्योदय व सूर्यास्त

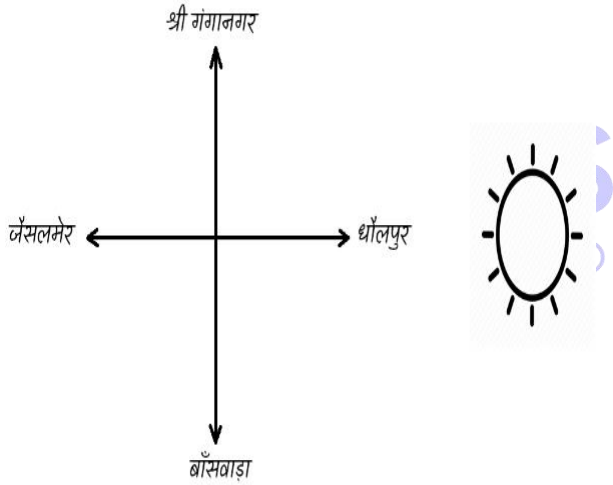

राजस्थान के पूर्वी भाग धौलपुर में होता है, जब कि सबसे पश्चिमी जिला जैसलमेर है। अतः जैसलमेर में सबसे अंत में सूर्योदय व सूर्यास्त होता है।

विस्तार :-राजस्थान राज्य की उत्तर से दक्षिण तक की कुल लंबाई 826 किलोमीटर है तथा इसका विस्तार उत्तर में श्रीगंगानगर जिलें के कोणा गांव से दक्षिण में बाँसवाड़ा जिलें की कुशलगढ़ तहसील के बोरकुंड गांव तक है।

इसी प्रकार पूरब से पश्चिम तक की चौड़ाई 869 किलोमीटर है तथा विस्तार पूरब में धौलपुर जिलें के सिलाना गांव से पश्चिम में जैसलमेर जिलें के कटरा गांव तक है।

आकृति :-

विषम कोणीय चतुर्भुज या पतंग के आकार के समान है।

राज्य की स्थलीय सीमा5920 किलोमीटर (1070 अंतर्राष्ट्रीय व 4850 अंतर्राज्यीय) है।

रेडक्लिफ रेखा :-

रेडक्लिफ रेखा भारत और पाकिस्तान के मध्य स्थित है। इसके संस्थापक सर सिरिल एम रेडक्लिफ को माना जाता है। इसकी स्थापना 14/15 अगस्त 1947 को की गई। इसकी भारत के साथ कुल सीमा 3,310 किलोमीटर है।

रेडक्लिफ रेखा पर भारत के चार राज्य स्थितहैं।

1. जम्मू-कश्मीर (1216 कि.मी.)
2. पंजाब (547 कि.मी.)
3. राजस्थान (1070 कि.मी.)
4. गुजरात (512 कि.मी.)

रेडक्लिफ रेखा के साथ सर्वाधिक सीमा- राजस्थान (1070 कि.मी.)

रेडक्लिफ रेखा के साथ सबसे कम सीमा- गुजरात(512 कि.मी.)

रेडक्लिफ रेखा के सर्वाधिक नजदीक राजधानी मुख्यालय :- श्रीनगर

रेडक्लिफ रेखा के सर्वाधिक दूर राजधानी मुख्यालय :- जयपुर

रेडक्लिफ रेखा पर क्षेत्र में बड़ा राज्य :- राजस्थान

रेडक्लिफ रेखा पर क्षेत्र में सबसे छोटा राज्य :- पंजाब

रेडक्लिफ रेखा के साथ राजस्थान की कुल सीमा 1070 कि.मी. है। जो राजस्थान के चार जिलों से लगती है।

1. श्रीगंगानगर - (210 कि.मी.)
2. बीकानेर - (168 कि.मी.)
3. जैसलमेर - (464 कि.मी.)
4. बाड़मेर - (228 कि.मी.)

रैडक्लिफ रेखा राज्य में उत्तर में गंगानगर के हिंदुमल कोट से लेकर दक्षिण में बाड़मेर के शाहगढ़ बाखासर गाँव तक विस्तृत है।

रेडक्लिफ रेखा पर पाकिस्तान के 9 जिलें पंजाब प्रान्त का बहावलपुर, बहावल नगर व रहीमयार खान तथा सिंध प्रान्त के घोटकी, सुक्कुर, खेरपुर, संघर, उमरकोट व थारपारकर राजस्थान से सीमा बनाते हैं।

राजस्थान के साथ सर्वाधिक सीमा-बहावलपुर

राजस्थानके साथ न्यूनतम सीमा- खैरपुर

पाकिस्तान के दो राज्य (प्रांत) राजस्थान से छुते हैं।

1. पंजाब प्रांत
2. सिंध प्रांत

[रेडक्लिफ रेखा एक कृत्रिम रेखाहै।]

राजस्थान से सर्वाधिक सीमा जैसलमेर (464 कि.मी.) व न्यूनतम सीमा बीकानेर(168 कि.मी.) की रेडक्लिफ रेखा से लगती है।

रेडक्लिफ के नजदीक जिला मुख्यालय :- श्रीगंगानगर

रेडक्लिफ के सर्वाधिक दूर जिला मुख्यालय :- बीकानेर

रेडक्लिफ पर क्षेत्रफल में बड़ा जिला :- जैसलमेर

रेडक्लिफ रेखा पर क्षेत्रफल में छोटा जिला :- श्रीगंगानगर

राजस्थान के केवल अन्तराष्ट्रीय सीमा वाले जिलें - 2 (बीकानेर, जैसलमेर)

राजस्थान के परिधिय जिलें :- 25

राजस्थान के अंतर्राज्यीय सीमा वाले जिलें :- 23

राजस्थान के केवल अंतर्राज्यीय सीमा वाले जिलें :- 21

राजस्थान के 2 ऐसे जिलें हैं जिनकी अंतर्राज्यीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सीमा है :- गंगानगर (पाकिस्तान + पंजाब), बाड़मेर(पाकिस्तान + गुजरात)

राजस्थान के 4 जिलें ऐसे है, जिनकी सीमा दो - दो राज्यों से लगती है-

हनुमानगढ़ :- पंजाब + हरियाणा

- भरतपुर :- हरियाणा + उतरप्रदेश
- धौलपुर :-उतरप्रदेश + मध्यप्रदेश
- बाँसवाड़ा :- मध्यप्रेदश + गुजरात

राजस्थान की अन्य राज्यों से सीमाएँ :-

पंजाब (89 कि.मी.)

राजस्थान के दो जिलों की सीमा पंजाब से लगती है तथा पंजाब के दो जिलें फाजिल्का व मुक्तसर की सीमा राजस्थान से लगती है । पंजाब के साथ सर्वाधिक सीमा श्रीगंगानगर व न्यूनतम सीमा हनुमानगढ़ की लगती है। पंजाब सीमा के नजदीक जिला मुख्यालय श्रीगंगानगर तथा दूर जिला मुख्यालय हनुमानगढ़ है। पंजाब सीमा पर क्षेत्रफल में बड़ा जिला श्रीगंगानगर व छोटा जिला हनुमानगढ़ है।

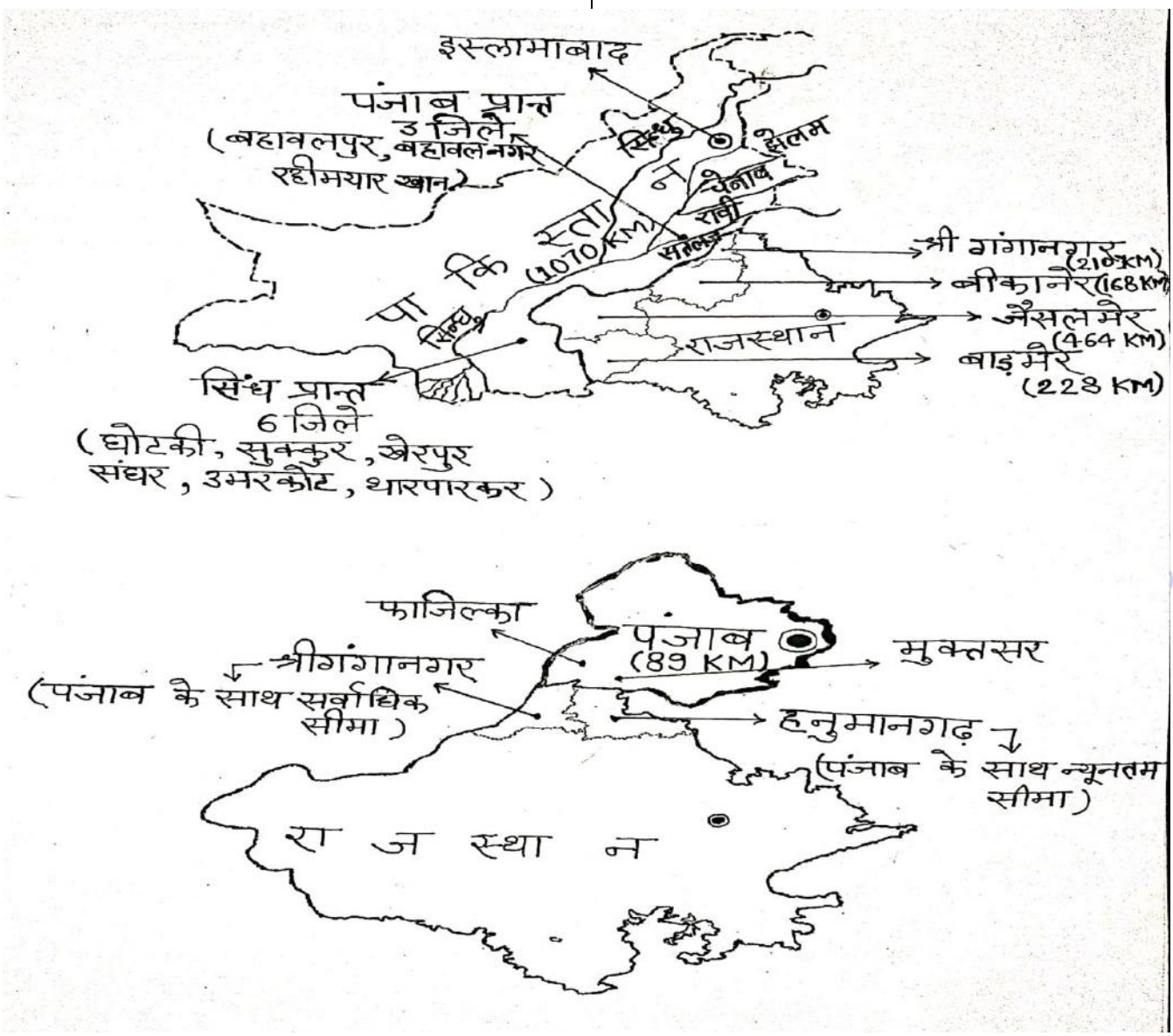

हरियाणा (1262 कि.मी.) :-

राजस्थान के 7 जिलों की सीमा हरियाणा के 7 जिलों :- सिरसा, फतेहबाद, हिसार, भिवाड़ी, महेन्द्रगढ़, रेवाड़ी, मेवात से लगती है। हरियाणा के साथ सर्वाधिक सीमा हनुमानगढ़ व न्यूनतम सीमा जयपुर की लगती है तथा सीमा के नजदीक जिला मुख्यालय हनुमानगढ़ व दूर मुख्यालय जयपुर का है। हरियाणा सीमा पर क्षेत्रफल में बड़ा जिला चुरू व छोटा जिला झुंझुनू है । मेवात (नुह) नव निर्मित जिला है जो राजस्थान के अलवर जिलें को छूता है।

उत्तरप्रदेश (877 कि.मी.) :-

राजस्थान के दो जिलों की सीमा उत्तरप्रदेश के दो जिलों (मथूरा व आगरा) से लगती है। उत्तरप्रदेश के साथ सर्वाधिक सीमा भरतपुर व न्यूनतम धौलपुर की लगती है। उत्तरप्रदेश की सीमा के नजदीक जिला

मुख्यालय भरतपुर व दूर जिला मुख्यालय धौलपुर है। उत्तरप्रदेश की सीमा पर क्षेत्रफल में बड़ा जिला भरतपुर व छोटा जिला धौलपुर है।

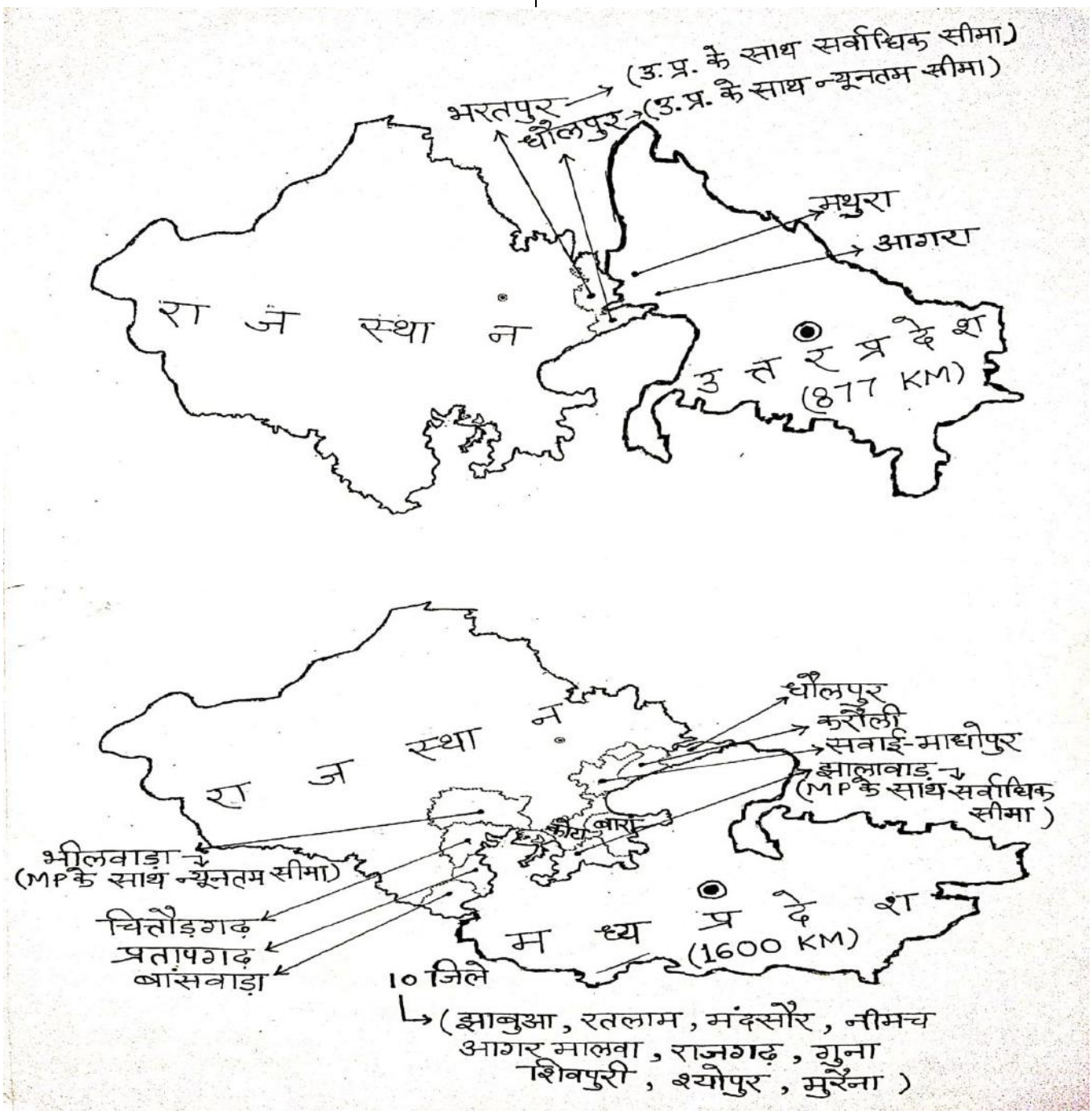

मध्यप्रदेश (1600 कि.मी.) :-

राजस्थान के 10 जिलों की सीमा मध्य प्रदेश के 10 जिलों की सीमा से लगती है।(झाबुआ, रतलाम, मंदसौर,निमच, अगरमालवा, राजगढ, गुना, शिवपुरी, श्यौपुर, मुरैना) मध्यप्रदेश के साथ सर्वाधिक सीमा झालावाड़ व न्यूनतम भीलवाड़ा की लगती है तथा सीमा के नजदीक मुख्यालय धौलपुर व दूर जिला मुख्यालय भीलवाड़ा है। मध्यप्रदेश की सीमा पर क्षेत्रफल में बड़ा जिला भीलवाड़ा व छोटा जिला धौलपुर है।

गुजरात (1022 कि.मी.) :-

राजस्थान के 6 जिलों की सीमा गुजरात के 6 जिलों से लगती है। (कच्छ, बनासकांठा, साबरकांठा, अरावली, माहीसागर, दाहोद)गुजरात के साथ

नोट – प्रिय उम्मीदवारों, यहाँ हमने केवल SAMPLE ही दिया है, पूरा टॉपिक नही दिया है। यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये हमारे संपर्क नंबर पर कॉल कीजिए या लिंक पर क्लिक करें। दोस्तों, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी "राजस्थान 3rd Grade Level – I (REET मुख्य परीक्षा)" में पूर्ण संभव मदद करेंगे और आप "INFUSION NOTES" के साथ इस परीक्षा में जरूर सफल होंगे, धन्यवाद।

संपर्क करें – 9694804063, 9887809083, 8233195718, 8504091672

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
REET (लेवल -I, 2)	2021	98 (150 में से)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)

FREE SAMPLE

राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

& Many More Exams like REET, UPSC, SSC Etc.

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

FREE SAMPLE

संपर्क करें- 9887809083, 8233195718, 9694804063, 8504091672

ONLINE ORDER के लिए OFFICIAL WEBSITE	Website- https://bit.ly/l1-3rd-grade-notes
PHONE NUMBER	+918504091672 9887809083 +918233195718 9694804063
TELEGRAM CHANNEL	https://t.me/infusion_notes
FACEBOOK PAGE	https://www.facebook.com/infusion.notes
WHATSAPP करें	https://wa.link/hx3rcz

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 2

राजस्थान का भौगोलिक स्वरूप

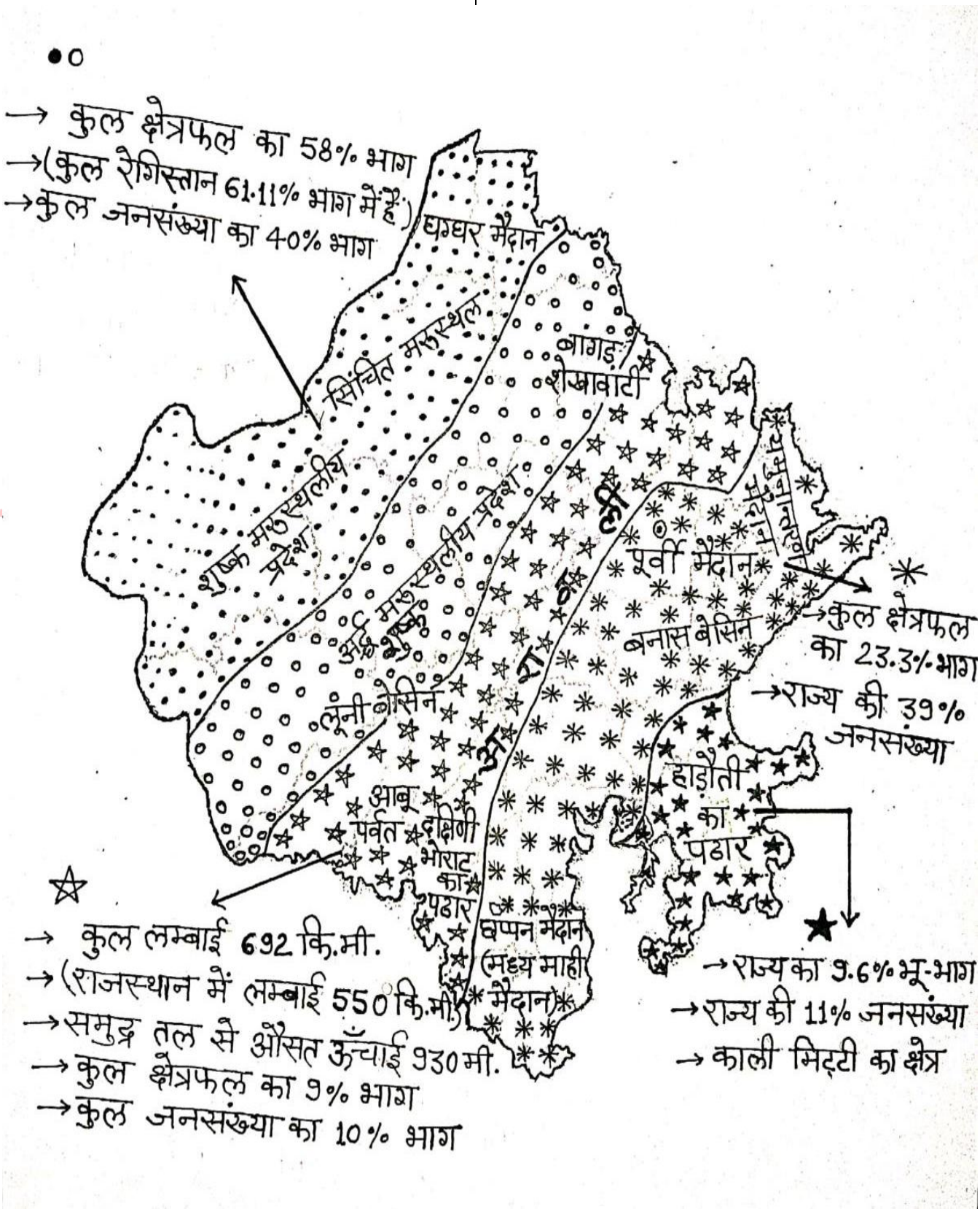

नोटः- *प्रिय पाठकों जैसा कि आपको ज्ञात है कि राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य है। इस विशाल राज्य में रेगिस्तान, नदियाँ, पर्वत एवं पहाडियाँ, पठार अलग-अलग क्षेत्रों में पाये जाते है । इन की वजह से राजस्थान को चार भौतिक प्रदेशों में बाँटा गया है-*

1. पश्चिमी मरूस्थलीय प्रदेश – वह क्षेत्र जहाँ पर रेगिस्तान पाया जाता हैं

2. अरावली पर्वतमाला- वह क्षेत्र जहाँ पर अरावली पर्वतमाला का विस्तार है।

3. पूर्वी मैदानी प्रदेश- वह क्षेत्र जहाँ पर अधिकांश दोमट व जलोढ मिट्टी पाई जाती हैं

4. दक्षिणी-पूर्वी पठारी प्रदेश- वह क्षेत्र जहाँ पर अधिकांश मात्रा में काली मिट्टी पाई जाती है । इस क्षेत्र को हाड़ोती का पठार भी कहते है।

प्रिय छात्रों, इन चारों प्रदेशों का विस्तृत वर्णन इस प्रकार है-

*1. **पश्चिमी मरूस्थलीय प्रदेशः-** जैसा कि पहले ही अवगत कराया जा चुका है कि राजस्थान का पश्चिमी मरूस्थलीय क्षेत्र टेथिस सागर का अवशेष है, और अरावली क्षेत्र गोंडवाना लैण्ड का हिस्सा है।*

पश्चिमी मरूस्थलीय प्रदेश का सामान्य परिचयः-

वर्तमान में रेगिस्तान का विस्तार राज्य के कुल 61.11 प्रतिशत हिस्से पर है।

***नोटः**-पहले ये क्षेत्र केवल 58 प्रतिशत भाग पर ही सीमित था, लेकिन वर्तमान में अरावली पर्वतमाला के कटी – फटी होने के कारण मरूस्थल का विस्तार पश्चिम से पूर्व की ओर बढ़ रहा है।*

अरावली पर्वतमाला के पश्चिम में कुल 12 जिलें स्थित हैं, उनमें से 12 जिलों में रेगिस्तान का विस्तार है । यह जिलें निम्न प्रकार हैं-

1. बीकानेर संभाग - बीकानेर, चुरू, हनुमानगढ़ , श्रीगंगानगर

2. जोधपुर संभाग - जोधपुर , जैसलमेर, जालौर, बाड़मेर, पाली (अपवाद- सिरोही)

3. शेखावाटी क्षेत्र - सीकर, झुंझुनू

4. अजमेर संभाग – नागौर

***नोटः** – राज्य के सिरोही जिलें में मरूस्थल का विस्तार नहीं है अर्थात् अरावली के पश्चिम में स्थित 13 जिलों में से सिरोही एक मात्र ऐसा जिला है, जो मरूस्थलीय जिलों की श्रेणी में शामिल नहीं है।*

थार का रेगिस्तान राजस्थान के उत्तर-पश्चिम भाग और पाकिस्तान में सिंध तथा पंजाब तक फैला है। यह उत्तर – पश्चिम में 644 किमी. लम्बा और 360 किमी चौड़ा है । इस का सामान्य ढाल उत्तर – पूर्व से दक्षिण –पश्चिम की ओर है । मरूस्थल का ऊँचा उठा हुआ उत्तर-पूर्वी भाग 'थली' तथा दक्षिण-पश्चिम भाग नीचे का 'तली' कहलाता है।

इस मरूस्थलीय क्षेत्र में राज्य की कुल जनसंख्या का लगभग 40 प्रतिशत हिस्सा निवास करता है।

यह विश्व का सबसे अधिक जनसंख्या वाला मरूस्थल है तथा इसके अलावा यह विश्व में जैव विविधता वाला मरूस्थल भी है।

थार के मरूस्थल की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ है कि यह विश्व का एक मात्र ऐसा मरूस्थल है, जिसके निर्माण में दक्षिण-पश्चिम मानसूनी हवाओं का मुख्य योगदान है। थार का मरूस्थल भारतीय उपमहाद्वीप में ऋतु चक्र को भी नियंत्रित करता है । ग्रीष्म काल में तेज गर्मी के कारण इस प्रदेश में न्यून वायु दाब केन्द्र विकसित हो जाता है जो दक्षिण-पश्चिमी मानसूनी हवाओं को आकर्षित करता है। ये हवायें सम्पूर्ण प्रायद्वीप में वर्षा करती है । भारतीय उपमहाद्वीप में मानसून को आकर्षित करने में इस मरूस्थल की उपस्थिति अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

इस क्षेत्र में शुष्क एवं अत्यंत विषम जलवायु पाई जाती है और तापमान गर्मियों में अत्यधिक (49°C तक) तथा सर्दियों में न्यूनतम (3° C तक) रहता है।

आंकल जीवाश्म पार्क, जलोद्भिद तल छट वाली ग्रेनाइट, खनिज तेल इत्यादि से इस तथ्य की पुष्ठि होती है, कि थार का मरूस्थल 'पर्मा का बोनिफेरस युग' में टेथिस सागर का हिस्सा था।

थार का मरूस्थल 'पेकियो आर्कटिक अफ्रीका' मरूस्थल का ही पूर्वी भाग है।

थार के मरूस्थल में स्थित प्रमुख उद्यान 'राष्ट्रीय मरूउद्यान

<u>मरूभूमि राष्ट्रीय उद्यान</u>

इस क्षेत्र की प्रमुख फसलें बाजरा, मोठ, ग्वार, इत्यादि है तथा प्रमुख नदी 'लूनी' है तथा प्रमुख नहर 'इंदिरा गाँधी' नहर है ।

इस क्षेत्र में तीन प्रकार का मरुस्थल पाया जाता है :-'

1. इर्ग 2. हम्मादा 3. रेग

रेतीले मरुस्थल को 'इर्ग' कहा जाता है।

पथरीले मरुस्थल को हम्मादा कहा जाता है इसका विस्तार जैसलमेर, जोधपुर , बाड़मेर व जालौर तक है।

- ऐसा मरुस्थल जिसमें रेत व पत्थर दोनों पाये जाते हैं अर्थात् मिश्रित मरुस्थल को ' रैग' कहा जाता है। यह जैसलमेर के निकट रामगढ़ बलोदृवा क्षेत्रों में पाया जाता है।
- प्रसिद्ध जन्तु वैज्ञानिक डॉ. ईश्वर प्रकाश ने कहा है कि राजस्थान के रेगिस्तानी क्षेत्र को मरू क्षेत्र नहीं कहकर 'रक्ष क्षेत्र 'कहा जाये क्योंकि यहाँ पर पर्याप्त मात्रा में जैव विविधता पाई जाती है।
- राज्य का मरुस्थल ऊष्ण मरुस्थल की श्रेणी में आता है यहां की बलूईया रेतीली मिट्टी से धोरों का निर्माण होता है, जिन्हे टीले , टीबे तथा बालूका स्तुप कहा जाता है। जैसलमेर की स्थानीय भाषा में धरियन कहा जाता है। धोरे या टीलों के तीन प्रकार होते है-

अनुद्धैर्य - हवा के समानान्तर बनने वाले

अनुप्रस्थः- हवा के लम्बत (समकोण पर) बनने वाले टीलें

बरखानः- अर्धचन्द्राकार आकृति वाले धोरे

नोटः- बरखान प्रकार के धोरे सर्वाधिक नुकसानदायी एवं सर्वाधिक अस्थिर होते है।

नोटः- जोधपुर राज्य का एकमात्र ऐसा जिला है जिसमें सभी प्रकार के बालुका स्तूप पाये जाते है।

मरुस्थल में पाई जाने वाली प्रमख संरचनाए तथा शब्दावली

1. **लाठी सीरीज :-** पाकिस्तान देश के सहारे (पास में) पोकरण से मोहनगढ़ तक की क्षेत्र लाठी सारिज के नाम से जाना जाता है।
- 2007 में कानरी के वैज्ञानिकों द्वारा यह स्पष्ट किया गया कि इस क्षेत्र में 80 मीटर लम्बी तथा 60 मीटर चौड़ी एक भूगर्भिक जल पट्टी का विस्तार है।
- इस क्षेत्र में धामण, करड, अजाण, लीलोण, सेवण घास मुख्य रूप से पायी जाती है।
- **नोट :-** सेवण घास का कटा हुआ रूप लीलण कहलाता है।
- राज्य का राज्य पक्षी गोड़ावण अपने अण्डे सेवण घास पर देता है । इसी कारण सेवण घास को गोड़ावण पक्षी की प्रजनन स्थली कहा जाता है।
- इसी क्षेत्र में जैसलमेर जिलें की सम तहसील में चन्दन गांव में एक मीठे पानी का जल स्त्रोत (कुआँ) है। जिससे प्रति घन्टे में लगभग 2.30 लाख लीटर मीठा पानी निकलता है । इसे चन्दन नलकूप या 'थार का घड़ा' भी कहा जाता है। इस कुएं का वास्तविक नाम 'चौहान' है।

2. पीवणा :- इस क्षेत्र में पाये जाने वाला जहरीला सर्प जो डंक नहीं मारता बल्कि रात्रि में सोते हुए व्यक्ति को श्वांस के द्वारा जहर देकर मारता है।

3. मावठ / महावठ / शीतकालीन वर्षाः - पश्चिमी विक्षोभों तथा भूमध्य सागरीय चक्रवातों से शीत काल में होने वाली वर्षा जो रबी की फसल के लिये उपयोगी होती है मावठ कहलाती है।

4. नेहड़ :- लगभग 100 वर्ष पूर्व राज्य के जालौर तथा बाड़मेर जिलें में समुद्र का जल आकर ठहरता था । अतः जालौर व बाड़मेर जिलें का क्षेत्र नेहड़ कहलाता था। नेहड़ का शाब्दिक अर्थ होता है 'समुद्र का जल'।

मरुस्थलीय क्षेत्र में जल संचय के तरीके

1. **आगोर :-** प्राचीन काल में मरुस्थलीय क्षेत्र में वर्षा के जल का संचय करने के लिये टांके बनाये जाते थे , जिन्हे आगोर कहा जाता था

2. **खड़ीन :-** कृषि के लिए वर्षा जल का संचय करना ।

3. **नाडी :-** मानव के दैनिक आवश्यकताओं तथा पशुपालन के लिये वर्षा का जल संचय करना।

4. **टोबा :-** नाडी को कृत्रिम रूप से और अधिक गहरा करना टोबा कहलाता है।

5. **बेरी :-** खडीन तथा नाड़ी के पास जो जल का रिसाव होता था उस जल को पुनः उपयोग में लाने हेतु इनके आस-पास छोट-छोटे कुँए बना दिये जाते थे जिन्हे बेरी कहा जाता है।

6. **प्लाया :-** सामान्य भाषा में गहरे पानी की बड़ी झीलों को प्लाया कहा जाता है । वर्षा काल में वर्षा

का जल मरुस्थल के बड़े-बड़े गर्तो में आने के बाद वहाँ की मिट्टी से लवणता को प्राप्त कर खारा हो जाता है । ऐसे बड़े गर्तों को प्लाया कहा जाता है। सर्वाधिक प्लाया झीलें जैसलमेर में हैं।

7. **रन/टाट/ढाढ :-** मरुस्थल में रेत के छोटे-छोटे गड्ढे जिनमें वर्षा का जल आकर ठहरता है तथा मिट्टी से लवणता को प्राप्त कर खारा हो जाता है। ऐसे छोटे-छोटे गड्ढे रन/टाट/ढाढ कहे जाते हैं।

8. **मिली/पोखर :-** छोटे-छोटे ऐसे गड्ढे जिन में वर्षा का मीठा जल आकर ठहरता है तिल्लीया पोखर कहलाते हैं।

महत्वपूर्ण तथ्य -

खादर :- चंबल बेसिन में 5 से 30 मीटर गहरी खड्ड युक्त बीहड़ भूमि को स्थानीय भाषा में खादर कहते हैं ।

धोरे :- रेगिस्तान में रेत के बड़े-बड़े टिले, जिनकी आकृति लहरदार होती हैं ।

बरखान :- रेगिस्तान में रेत के अर्धचंद्राकार बड़े-बड़े टीले । यह एक स्थान से दूसरे स्थान गतिशील रहते हैं ।

लघु मरुस्थल :- महान थार मरुस्थल का पूर्वी भाग जो कच्छ से बीकानेर तक फैला है ।

लूनी बेसिन :- अजमेर के दक्षिण-पश्चिम से अरावली श्रेणी के पश्चिम में विस्तृत लूनी नदी का प्रवाह क्षेत्र है ।

बीहड़ भूमि :- चंबल नदी के द्वारा मिट्टी के भारी कटाव के कारण प्रवाह क्षेत्र में बन गई गहरी घाटियां व टीले ।

राजस्थान व मध्य प्रदेश के सीमावर्ती जिलें - भिंड मुरैना,धौलपुर आदि में ऐसी बहुत-सी कंदराएँ (Revines) हैं ।

धरियन :- जैसलमेर जिलें के ऐसे भू-भाग, जहाँ आबादी लगभग नगन्य हैं, स्थानांतरित बालुका स्तूप को स्थानीय भाषा में इस नाम से पुकारते हैं ।

वागड़ प्रदेश :- बाँसवाड़ा व डूंगरपुर के पहाड़ी क्षेत्र को स्थानीय भाषा में वागड़ कहते हैं ।

बांगर प्रदेश :- यह अरावली पर्वत एवं पश्चिमी मरुस्थल के मध्य का भाग है जो मुख्यतः झुंझुनू, सीकर व नागौर जिलें में विस्तृत है ।

छप्पन के मैदान :- बाँसवाड़ा व प्रतापगढ़ के बीच माही बेसिन में 56 ग्राम समूहों (56 नदी नालों का प्रवाह क्षेत्र) का क्षेत्र ।

पीड़मांट :- अरावली श्रेणी में देवगढ़ के समीप स्थित पृथक निर्जन ।

मैदान :- पहाड़िया जिनके उच्च भू-भाग टीलेनुमा हैं ।

बिजासण का पहाड़ :- मांडलगढ़ के कस्बे के पास स्थित हैं ।

विंध्याचल पर्वत :- राजस्थान के दक्षिण-पूर्व में तथा मध्य प्रदेश में स्थित हैं ।

भभूल्या :- राजस्थान में छोटे छेत्र में उत्पन्न वायु भंवर को स्थानीय भाषा में भभूल्या कहते हैं ।

पुरवइयाँ :- बंगाल की खाड़ी से आने वाली मानसूनी हवाओं को राजस्थान के स्थानीय भाषा में पुरवइयाँ (पुरवाई) कहते हैं ।

शुष्क मरुस्थल

उत्तर पश्चिम मरुस्थल का वह क्षेत्र जहाँ वनस्पति नगण्य या नाम मात्र की पायी जाती हैं, तथा वर्षा बहुत ही कम मात्रा में होती हैं। इस क्षेत्र में वर्षा 0 से 25 से.मी. तक होती हैं।

इस क्षेत्र में कांटेदार झाड़ियां बहुतायात में पायी जाती हैं।

1. **बालूका स्तूप युक्त प्रदेश :-** उत्तर पश्चिम मरुस्थल का वह क्षेत्र जहाँ धोरे/टीले या टीलों का निर्माण भी होता हैं। बालुका स्तूप युक्त प्रदेश हैं।

बालूका स्तूप युक्त प्रदेश के अन्तर्गत राज्य की अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर स्थित चारों जिलें गंगा नगर बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर तथा चुरू व पश्चिमी नागौर एवं जोधपुर जिला शामिल हैं।

2. **बालूका स्तूप मुक्त प्रदेश :-** उत्तर पश्चिम मरुस्थल का वह क्षेत्र जहाँ धोरों का निर्माण नहीं होता है अर्थात् वह क्षेत्र जो चट्टानों से अच्छादित है, बालुका स्तूप मुक्त प्रदेश हैं।

इस क्षेत्र में जुरासिक काल के जीवाश्म के अवशेष पाये जाते हैं इसका उदाहरण जैसलमेर जिलें में स्थित आंकल गाँव में 'वुड फॉसिल पार्क' हैं।

5. **जोधपुर जंतुआलय** :- यह गोंडावण पक्षी के कृत्रिम प्रजनन के लिए प्रसिद्ध है।

6. **कोटा जंतुआलय** :-1954

(33) राजस्थान के प्रमुख शिकार निषिद्ध क्षेत्र / आखेट निषिद्ध क्षेत्र

1. राजस्थान का सबसे बड़ा शिकार निषिद्ध क्षेत्र – फोटसर संवत्सर -चूरु

2. सबसे छोटा – सैंथल सागर - जयपुर

Note:- राजस्थान में सबसे अधिक शिकार निषिद्ध क्षेत्र बीकानेर में है (7)

जोधपुर में (5)

अजमेर में (3)

राजस्थान के वन मंडल 13

1. जोधपुर (9 जिलें)

2.जयपुर वन मंडल – जयपुर, दौसा, सीकर, झुंझुनू

3. भरतपुर वन मंडल – अलवर, भरतपुर, धौलपुर, करौली

4. अजमेर वन मंडल -

5. टोंक वन मंडल - भीलवाड़ा - टोंक

6. कोटा वन मंडल

7. बूंदी वन मंडल

8. बाराँ वन मंडल

9. झालावाड़ वन मंडल

10. चित्तौड़गढ़ मंडल

11. बाँसवाड़ा वन मंडल

12. उदयपुर वनमंडल –उदयपुर, राजसमंद

13. सिरोही वन मंडल - सिरोह

अध्याय – 7

मृदाएँ एवं मृदा संरक्षण

मृदा मानव जीवन का मूल आधार है अतः सभी सभ्यताओं एवं संस्कृतियों का विकास मिट्टी से हुआ है।

मृदा संसाधन मानव जीवन को प्रभावित करता है जिन स्थानों पर मिट्टी अधिक उपजाऊ होती है वहाँ मनुष्य का अधिक निवास एवं जहाँ अनुपजाऊ होती है वहाँ मनुष्य का निवास कम पाया जाता है।

इसलिए कहा जा सकता है कि मृदा संसाधन एक महत्त्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है।

मृदा :- भू - पृष्ठ पर असंगठित पदार्थों की वह ऊपरी परत जो कि मूल चट्टानों या वनस्पति के योग से निर्मित होती है। मृदा कहलाती है।

राजस्थान में मृदा का वर्गीकरण दो प्रकार से किया गया है -

1. **सामान्य वर्गीकरण** :- इसमें मिट्टी को रंगों के आधार पर वर्गीकृत किया गया है।

   I. रेतीली मिट्टी

   II. भूरी रेतीली मिट्टी / भूरी पीली मिट्टी

   III. लाल मिट्टी

   IV. लाल - काली मिश्रित मिट्टी

   V. लाल - पीली मिट्टी

   VI. काली मिट्टी / मध्यम काली मिट्टी

   VII. जलोढ़ मिट्टी / दोमट / कछारी मिट्टी

   VIII. भूरी दोमट मिट्टी

   IX. पर्वतीय मिट्टी

   X. लवणीय मिट्टी

2. 1992 में अमेरिका में वैज्ञानिकों द्वारा वैज्ञानिक आधार पर 11 भागों में बाँटा था

जिसमें से राजस्थान में पाँच प्रकार की मिट्टी पाई जाती है।

I. वर्टिसोल (Vertisoil)

II. एरिडोसोल (Eridosoil)

III. अल्फीसोल (Alfisoil)

IV. एंटिसोल (Antisoil)

V. इंसेप्टीसोल (Inseptisoil)

राजस्थान में सामान्य वर्गीकरण के आधार पर :-

1) रेतीली मिट्टी / बलुई मिट्टी / मरुस्थली मिट्टी :-

यह मिट्टी जैसलमेर, बीकानेर, बाड़मेर, जोधपुर, नागौर, चूरु जिले में विस्तृत है।

इस मिट्टी के कण मोटे होने के कारण इसमें जल ग्रहण करने की क्षमता सबसे कम पाई जाती है।

इस मिट्टी में नाइट्रोजन व कार्बनिक पदार्थों की कमी परंतु कैल्शियम के तत्व की प्रधानता पाई जाती है।

इस मिट्टी में मुख्य रूप से मोटे अनाजों का उत्पादन जैसे ग्वार, मोठ, बाजरा कम पानी की फसलें, आदि का उत्पादन होता है।

2) भूरी रेतीली मिट्टी भूरी पीली मिट्टी:-यह मिट्टी मुख्य रूप से सीकर, चूरू, झुंझुनू, नागौर, पाली, जालौर में विस्तृत है।

इस मिट्टी में नाइट्रोजन एवं कार्बनिक पदार्थों की कमी एवं फॉस्फोट के तत्वों की प्रधानता पाई जाती है।

इस मिट्टी में मुख्य रूप से ज्वार, बाजरा, मक्का, ईसबगोल, जीरा, मेहंदी, सरसों, जौ, गेहूं आदि का उत्पादन होता है।

3) लाल लोमी मिट्टी :- यह मिट्टी मुख्य रूप से उदयपुर, डूंगरपुर, बाँसवाड़ा, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, राजसमंद, सिरोही आदि जिलों में पाई जाती है।

इस मिट्टी में नाइट्रोजन, कैल्शियम, फॉस्फोरस के तत्वों की कमी एवं लौहा व पोटाश के तत्व की प्रधानता पाई जाती है।

इस मिट्टी में लौहे के तत्व अधिक होने के कारण इसका रंग गहरा लाल हो जाता है।

इस मिट्टी में मुख्य रूप से मक्का की खेती की जाती है।

4) लाल - काली मिश्रित मिट्टी :- यह राजस्थान में मुख्य रूप से काली - लाल मिट्टी के मध्य उदयपुर, डूंगरपुर, बाँसवाड़ा, प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़ में स्थित है।

इस मिट्टी में नाइट्रोजन, कैल्शियम, फॉस्फोरस, फॉस्फेट, नाइट्रोजन, व कैल्शियम के तत्वों की कमी पाई जाती है।

इस मिट्टी के कण छोटे - छोटे होते हैं। इसी कारण यह मिट्टी कपास, गन्ना, मक्का आदि के उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण है।

5) लाल - पीली मिट्टी :- यह मिट्टी सवाई माधोपुर, भीलवाड़ा, अजमेर व टोंक जिलों में पाई जाती है।

इस मिट्टी में नाइट्रोजन, कैल्शियम एवं कार्बनिक यौगिकों की कमी एवं लौहऑक्साइड के प्रधानता पाई जाती है।

6) काली मिट्टी:- यह मिट्टी मुख्य रूप से कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़ में पाई जाती है।

इस मिट्टी में कपास का अधिक उत्पादन होने के कारण इसे कपासी मिट्टी भी कहा जाता है।

इस मिट्टी में नाइट्रोजन व कैल्शियम के तत्वों की कमी एवं जैविक पदार्थ व पोटाश के तत्वों की प्रधानता पाई जाती है।

इस मिट्टी में कपास, गन्ना, चावल, खट्टे रसदार फल आदि का अत्यधिक उत्पादन होता है।

7) **जलोढ़ / दोमट / कछारी मिट्टी**:-

यह मिट्टी मुख्य रूप से सवाई माधोपुर, टोंक, भीलवाड़ा, जयपुर, दौसा / माही नदी बेसिन / चंबल नदी बेसिन / बनास नदी बेसिन में विस्तृत है।

इस मिट्टी में कैल्शियम व फॉस्फेट के तत्वों की कमी एवं नाइट्रोजन व पोटाश की अधिकता पाई जाती है।

इसी कारण राजस्थान में सबसे अधिक उपजाऊ मिट्टी जलोढ़ मिट्टी को माना जाता है।

इस मिट्टी में मुख्य रूप से सरसों गेहूँ चावल कपास गन्ना आदि का उत्पादन होता है।

8) <u>भूरी दोमट मिट्टी</u> :- राजस्थान में यह मिट्टी मुख्य रूप से बनास नदी बेसिन में पाई जाती है।

9) <u>पर्वतीय मिट्टी</u>:- यह मिट्टी मुख्य रूप से राजस्थान के अरावली पर्वतीय प्रदेशों में पाई जाती है।

10) <u>लवणीय मिट्टी</u> :- राजस्थान में यह मिट्टी मुख्य रूप से श्रीगंगानगर, बीकानेर, बाड़मेर, जालौर में पाई जाती है। इस मिट्टी में लवणीय और क्षारीय तत्व अधिक होने के कारण यह अनुपजाऊ मिट्टी है।

इस मिट्टी में जिप्सम, जैविक खाद, रॉक फॉस्फेट आदि के उपयोग से इसे उपजाऊ बनाया जा सकता है।

<u>भूरी जलोढ़ मिट्टी</u> :- श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ में पाई जाती है।

<u>मृदा संरक्षण</u>

मृदा किसी भी प्रदेश अथवा क्षेत्र के कृषि विकास का आधार है। सामान्यतया यह माना जाता है कि मृदा एक ऐसा संसाधन है जो कभी समाप्त नहीं होता और प्रकृति इसे संरक्षित करती रहती है। किन्तु वास्तविक सत्य इससे भिन्न है अर्थात् मृदा का निरन्तर विनाश होता रहा है ।
प्राकृतिक एवं मानवीय कारणों से मृदा नष्ट होती जा रही है जो एक ऐसा संकट है जिसका निराकरण यदि समय पर नहीं हुआ तो विनाश का कारण बन जायेगा। इसी कारण मृदा का संरक्षण आवश्यक है।

मृदा की सबसे बड़ी समस्या मृदा अपरदन है अर्थात् जल से, वायु से अथवा सामान्य प्रक्रिया से मृदा का कटाव होता जाता है ।
राजस्थान के मरुस्थलीय क्षेत्रों में वायु अपरदन की समस्या है, तो चम्बल नदी के क्षेत्रों में जल अपरदन से हजारों हैक्टेयर भूमि 'बीहड़' में बदल गई है ।
भूमि की लवणता एवं भूमि का जल प्लावित होना वर्तमान में नहरी सिंचित क्षेत्रों की प्रधान समस्या है।
इसी प्रकार भूमि का उपजाऊपन कम हो जाना सम्पूर्ण राज्य की समस्या है । अतः भूमि का उचित संरक्षण अति आवष्यक है।

<u>मृदा संरक्षण की प्रमुख विधियाँ निम्नलिखित हैं-</u>

1. वनस्पति आवरण का विकास - मृदा के कटाव को रोकने के लिये भूमि को संगठित रखना आवश्यक है। इसका सबसे सार्थक उपाय वृक्षारोपण है क्योंकि वृक्षों की जड़े भूमि को संगठित रखती है और भूमि का कटाव नहीं होता । इसके लिये संरक्षी वृक्षारोपण किया जाना आवश्यक है। हरित पेटियों का विकास एक उपयुक्त कदम है।

2. पट्टीदार कृषि - विधि से फसलों को समोच्च रेखाओं पर पंक्तियों में इस प्रकार बोया जाता है कि प्रवाहित जल का वेग कम हो जाता है तथा प्रवाहित मृदा अपरदन रोधी पट्टिकाओं में जमा हो जाती है।

3. फसल चक्रीकरण - यदि एक प्रकार की फसल निरन्तर उगाई जायगी तो भूमि के अनेक रासायनिक एवं जैविक तत्व कम हो जाते है और भूमि की उर्वरा शक्ति समाप्त हो जाती है। यदि फसलों को बदल-बदल कर बोया गया तो भूमि की उर्वरा शक्ति बनी रहती है।

4. पशुचारण पर नियंत्रण - अनियन्त्रित पशुचारण भूमि कटाव का प्रमुख कारण है इसे नियन्त्रित किया जाना आवष्यक है।

5. रासायनिक उर्वरकों का सीमित प्रयोग - निरंतर रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से भूमि की उर्वरा शक्ति कम होने लगती है। अतः रासायनिक उर्वरकों के स्थान पर जैविक उर्वरकों का प्रयोग उत्तम रहता है। उपर्युक्त विधियों के अतिरिक्त बाढ़ नियंत्रण, स्थानान्तरण कृषि पर प्रतिबन्ध, अवनालिया नियंत्रण, उचित भूमि उपयोग तथा मृदा प्रबन्धन किया जाना आवश्यक है।

नोट – प्रिय उम्मीदवारों, यहाँ हमने केवल SAMPLE ही दिया है, पूरा टॉपिक नही दिया है। यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये हमारे संपर्क नंबर पर कॉल कीजिए या लिंक पर क्लिक करें। दोस्तों, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी "राजस्थान 3rd Grade Level – I (REET मुख्य परीक्षा)" में पूर्ण संभव मदद करेंगे और आप "INFUSION NOTES" के साथ इस परीक्षा में जरूर सफल होंगे, धन्यवाद।

संपर्क करें – 9694804063, 9887809083, 8233195718, 8504091672

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
REET (लेवल -I, 2)	2021	98 (150 में से)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)

FREE SAMPLE

राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

& Many More Exams like REET, UPSC, SSC Etc.

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

FREE SAMPLE

संपर्क करें- 9887809083, 8233195718, 9694804063, 8504091672

ONLINE ORDER के लिए OFFICIAL WEBSITE	Website- https://bit.ly/l1-3rd-grade-notes
PHONE NUMBER	+918504091672 9887809083 +918233195718 9694804063
TELEGRAM CHANNEL	https://t.me/infusion_notes
FACEBOOK PAGE	https://www.facebook.com/infusion.notes
WHATSAPP करें	https://wa.link/hx3rcz

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – II

धात्विक एवं अधात्विक खनिज

राजस्थान में खनिज संसाधन

प्रिय छात्रों राजस्थान में कई प्रकार के खनिज पाए जाते हैं।

जैसा कि आपको पता है राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य है यहाँ पाई जाने वाली अधिक विविधताओं के कारण यह राज्य खनिज संपदा की दृष्टि से एक संपन्न राज्य है । और इसी वजह से इसे "खनिजों का अजायबघर" भी कहा जाता है । दोस्तों खनिज भंडार की दृष्टि से राजस्थान का देश में झारखंड के बाद दूसरा स्थान आता है जबकि खनिज उत्पादन मूल्य की दृष्टि से झारखंड, मध्यप्रदेश, गुजरात, असम के बाद राजस्थान का पांचवा स्थान है । राजस्थान में देश का कुल खनन क्षेत्र का 5.7% क्षेत्रफल आता है । देश में सर्वाधिक खाने राजस्थान में स्थित है । देश के कुल खनिज उत्पादन में राजस्थान का योगदान 22% है।

राजस्थान में 80 से अधिक खनिज पाए जाते हैं आइए जानते हैं वह कौन - कौन से खनिज यहाँ पाए जाते हैं।

1. ऐसे खनिज जिन पर राजस्थान का एकाधिकार है -

पन्ना, जास्पर, तामड़ा, वोलेस्टोनाइट

2. ऐसे खनिज जिनके उत्पादन में राजस्थान का प्रथम स्थान है -

जस्ता - 97%, फ्लोराइड 96%, एबेस्टोस 96 %, रॉकफोस्फेट 95%, जिप्सम 94 % चूना पत्थर 98%, खड़िया मिट्टी 92%, घीया पत्थर 90%, चांदी 80%, मकराना (मार्बल) 75%, सीसा 75%, फेस्फार 75%, टंगस्टन 75%, कैल्साइट 70%, फायर क्ले 65%, ईमारती पत्थर 60%, बेंटोनाइट 60%, कैडमियम 60%

3. वे खनिज जिनकी राजस्थान में कमी है - लोहा, कोयला, मैंगनीज, खनिज तेल, ग्रेफाइट

राजस्थान में पाए जाने वाले खनिजों को तीन प्रकारों में बांटा जा सकता है –

खनिज के प्रकार

खनिज के मुख्य तीन प्रकार है धात्विक खनिज, अधात्विक खनिज, ऊर्जा खनिज।

धात्विक खनिज

धात्विक खनिज पदार्थ जिनमे धातु अंश पाया जाता है, उन्हें धात्विक खनिज कहते है। धात्विक खनिज ताप एवं विद्युत् के सुचालक होते है, खनिज खानों से निकाले जाने पर इसमें कई सारी अशुद्धिया होती है। खनिज को पिघलाने पर धातु प्राप्त होती है इसलिए इसे धात्विक खनिज कहा जाता है। धात्विक खनिज बहुत ही कठोर और चमकीली होती है। धात्विक खनिज को पिटा जा सकता और आकार दिया जा सकता है यह खनिज टूट नहीं सकता है केवल पिगल सकता है। धात्विक खनिज में तन्मयता का गुणधर्म होता है। धात्विक खनिज के तिन प्रकार होते है, लौह धात्विक खनिज, अलौह धात्विक खनिज, बहुमूल्य धात्विक खनिज।

1. **धात्विक खनिज** – लौह अयस्क, मैंगनीज, टंगस्टन, सीसा, जस्ता, तांबा, चांदी इत्यादि।

2. **अधात्विक खनिज** - अभ्रक, एस्बेस्टस, फेल्सपार, बालुका मिट्टी, चूना पत्थर, पन्ना, तामड़ा इत्यादि।

3. **ईंधन** - कोयला, पेट्रोलियम, खनिज इत्यादि।

दोस्तों खनिजों की दृष्टि से राजस्थान में अरावली प्रदेश और पठारी प्रदेश काफी समृद्ध है।

- **धात्विक खनिज -**

1. लोहा –राजस्थान में लोहा मुख्य रूप से अरावली के उत्तर – पूर्व एवं दक्षिण- पूर्व में पाया जाता है।

लौहा अयस्क चार प्रकार का होता है-

i. मैग्नेटाइट - 74 %

ii. हेमेटाइट - 65 %

iii. लिमोनाइट - 50 %

iv. सिडेराइट - 40%

→राजस्थान में मुख्य रूप से लोहे का उत्पादन निम्न स्थानों पर होता है एवं राजस्थान में हेमेटाइट व लिमोनाइट लौह अयस्क पाया जाता है।

प्रमुख खान-

- मोरिजा- बानोल- जयपुर
- नीमला- राइसेला- दौंसा
- सिंघाना- डाबला-झुंझुनू
- नीम का थाना- सीकर
- थूर हुण्डेर - उदयपुर
- नाथरा की पाल – उदयपुर

राजस्थान में सबसे अधिक लौहे का उत्पादन जयपुर जिले से होता है । यह हेमेटाइट प्रकार का है।

2. सीसा-जस्ता :- सीसे जस्ते के अयस्क को गैलेना कहा जाता है । यह अयस्क मिश्रित रूप में मिलने के कारण इसे जुड़वा खनिज भी कहते हैं।

राजस्थान में जिन स्थानों पर सीसे – जस्ते का उत्खनन होता है उन्हीं स्थानों से चाँदी व तांबा का उत्खनन होता है।

प्रमुख खान-

- जावर खान- उदयपुर

→यह देश की सबसे बड़ी जस्ते की खान है।

- राजपुरा-दरीबा- राजसमंद
- पुर- दरीबा- भीलवाड़ा
- रामपुरा- आगूचा- भीलवाड़ा
- गुढ़ा किशोरी - अलवर
- चौथ का बरवाड़ा - सवाई माधोपुर
- मोचिया – मगरा - उदयपुर
- रेल- मगरा- राजसमंद

→ राजस्थान में जस्ते के उत्खनन के लिए दो संयंत्र स्थापित किये गये हैं।

i. हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड, उदयपुर :- इसकी स्थापना केन्द्र सरकार के द्वारा की गई जो मुख्य रूप से देबारी नामक स्थान पर उत्खनन का कार्य करता है।

ii. चन्देरिया सुपर जिंक स्मेल्टर, चितौड़गढ :- इसकी स्थापना ब्रिटेन के सहयोग से की गई जो मुख्य रूप से जस्ते का उत्खनन कार्य करता है।

→राजस्थान में सीसा गलाने का संयंत्र न होने के कारण सीसे के अयस्क को टुंडू बिहार भेजा जाता है।

→राजसमंद के दरीबा, नामक स्थान पर सीसा गलाने का संयंत्र स्थापित किया गया है लेकिन इसकी क्षमता कम होने के कारण सीसे के बचे हुए अयस्क को बिहार भेजा जाता है।

3. चाँदी :-देश में सबसे अधिक चाँदी का उत्पादन राजस्थान में होता है।

प्रमुख खान

- राजपुरा – दरीबा - राजसमंद
- रामपुरा - आगूचा- भीलवाड़ा

4. सोना :- राजस्थान में सबसे अधिक सोने के भण्डार बाँसवाड़ा जिले में पाया जाता है।

→इसके अलावा दौंसा जिले में भी सोने के क्षेत्रों का पता लगाया गया है।

बाँसवाड़ा के प्रमुख खान

- आनन्दपुर - भूकिया क्षेत्र
- जगपुर

नोट - आनन्दपुर भूकिया बाँसवाड़ा में हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड के द्वारा सोने की खोज का कार्य किया जा रहा है।

5. तांबा :- तांबा राजस्थान में सबसे अधिक खेतड़ी नामक स्थान से निकाला जाता है।

→तांबे के उत्पादन में राजस्थान का उड़ीसा के बाद दूसरा स्थान है एवं भंडार की दृष्टि से उड़ीसा, आंध्रप्रदेश के बाद तीसरा स्थान है।

→राजस्थान में तांबा परिशोधन शाला खेतड़ी कस्बे में स्थापित की गयी है।

→राजस्थान में तांबे के उत्खनन का कार्य हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड के द्वारा किया जा है।

→हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड की राजस्थान में 3 परियोजनाएँ चल रही है।

i. HCL- Hindustan Copper Ltd.- खेतड़ी (झुंझुनू)

ii. चांदमारी- कॉपर लि.- झुंझुनू

iii. नीम का थाना कॉपर लि. – सीकर

तांबे के प्रमुख उत्खनन क्षेत्र

प्रमुख क्षेत्र

- गौठ–मांगलोद- नागौर (सर्वाधिक)
- भद्वासी- नागौर
- बिसरासर- राज्य की सबसे बड़ी खान - बीकानेर
- जामसर - राज्य का सबसे बड़ा जमाव – बीकानेर

- **अधात्विक खनिज**

जिन खनिज पदार्थ में धात्विक के अंश नही होते है, उन्हें अधात्विक खनिज कहा जाता है। अधात्विक खनिज में अशुद्धिय बहुत ही कम होती है धात्विक खनिज को पिग्लाने से धातु की प्राप्ति नही होती है इस लिए उन्हें अधात्विक खनिज कहा जाता है, इस खनिज को भंगुर की प्रकृति कहते है। अधात्विक खनिज की अपनी एक चमक होती है। अधात्विक खनिज पत्थर एवं मिट्टी से बनते हैं तथा ये **अवसादी एवं परतदार चट्टानों** में पाये जाते है। अधात्विक को पिटा नही जा सकता और इनको अकार नही दिया जा सकता है। अधात्विक खनिज को पिट ने पर या पिग्लाने पर यह टूट जाती है।

अधात्विक खनिज के प्रकार

अधात्वि खनिज के दो प्रकार है कार्बनिक खनिज और अकार्बनिक खनिज कार्बनिक खनिज ऐसे खनिज जिनमें **जीवाश्म** होता है उन्हें कार्बनिक खनिज कहते हैं। जैसे की कोयला, पेट्रोलियम । अकार्बनिक खनिज ऐसे खनिज जिनमें **जीवाश्म नहीं** होता है, उन्हें अकार्बनिक खनिज कहते हैं।

- अधात्विक खनिजों के अन्तर्गत हीरा, अभ्रक, चूनापत्थर, ऐसबेस्टस, डोलोमाइट, काइनाइट, सिलिमेनाइट और नमक आदि को शामिल किया जाता है |

चूना-पत्थर

यह मुख्य रूप से अवसादी चट्टानों में पाया जाता है।

चूना पत्थर की खानों में अगर 45 % से अधिक मैग्नीशियम हो तो उसे 'डोलोमाइट' कहा जाता है।

स्टील ग्रेट चूना पत्थर - जैसलमेर के सानू क्षेत्र में।

सीमेंट ग्रेट - चितौड़गढ़

कैमिकल ग्रेट चूना पत्थर - जोधपुर व नागौर

अभ्रक

→अभ्रक आग्नेय एवं कायांतरित चट्टानों में काले रंग के टुकड़ों के रूप में पाया जाता है।

→इसका उपयोग विद्युत उद्योगों में, सजावटी सामानों में एवं ताप भट्टियों में किया जाता है।

→यह ताप का कुचालक होता है।

→माइकेनाइट उद्योग - अभ्रक के चूरे से ईंट तथा चादरें बनाने वाले उद्योग को माइकेनाइट उद्योग कहा जाता है।

→इस उद्योग के सर्वाधिक कारखानें भीलवाड़ा जिले में पाये जाते है।

रूबी अभ्रक

→सफेद अभ्रक को रूबी अभ्रक कहा जाता है।

बायोटाइट अभ्रक

→गुलाबी अभ्रक को बायोटाइट अभ्रक कहा जाता है।

→इसका उपयोग दवाईयाँ, सजावटी सामान, वायुयान एवं ताप भट्टियों में किया जाता है।

प्रमुख क्षेत्र

1. भीलवाड़ा - शाहपुरा, पोटला, फुलिया, नट की खेड़ी।

→अभ्रक का सर्वाधिक उत्पादन भीलवाड़ा में होता है

2. अजमेर- ब्यावर, जालिया, भिनाय

3. उदयपुर

4. जयपुर - बंजारीखान

→राजस्थान अभ्रक का उत्पादन की दृष्टि से दूसरा स्थान है।

रॉक फास्फेट

जिन चट्टानों में डाई कैल्सियम फास्फेट का प्रतिशत अधिक पाया जाता है उन्हें रॉक फास्फेट चट्टान कहा जाता है।

→इसका उपयोग रासायनिक खाद के उत्पादन में अत्यधिक किया जाता है।

क्षेत्र

1. झामरकोटड़ा (उदयपुर)-देश की सबसे बडी रॉक फास्फेट खान

→इसके अलावा उदयपुर के माटोन, कानपुरा, नीमच आदि से भी इनका उत्पादन होता है।

इतिहास एवं संस्कृति

अध्याय – I

राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएँ

कालीबंगा
आहड़
गणेश्वर
बालाथल और
बैराठ

- **पाषाणकालीन सभ्यता**

I. बागौर (भीलवाड़ा)

प्रिय छात्रों किसी भी सभ्यता का विकास किसी नदी के किनारे होता है क्योंकि जल ही जीवन है जल की आवश्यकता खेती के लिए और अन्य उपयोगों के लिए की पड़ती है।

- इसी प्रकार भीलवाड़ा जिले की माण्डल तहसील में कोठारी नदी के तट पर स्थित इस पुरातात्विक स्थल का उत्खनन 1967-68 से 1969-70 की अवधि में राजस्थान राज्य पुरातत्व विभाग एवं दक्कन कॉलेज, पुणे के तत्त्वावधान में श्री वी.एन. मिश्र एवं डॉ. एल.एस. लेशनि के नेतृत्व में हुआ है
- बागौर के उत्खनन में प्राप्त पाषाण उपकरणों को स्फटिक (Quartz) एवं चर्ट पत्थरों से बनाया जाता था। इनमें मुख्यतः पृथुक (Flake), फलक (Blade) एवं अपखण्ड (Chip) बनाये जाते थे। ये उपकरण आकार में बहुत छोटे (लघु अश्म उपकरण- Microliths) थे।
- यहाँ पाये गये लघु पाषणा उपकरणों में ब्लेड, छिद्रक, स्क्रेपर, बेधक एवं चांद्रिक आदि प्रमुख हैं।
- इन्हें मछली पकड़ने, जंगली जानवरों का शिकार करने, छीलने, छेद करने आदि कार्यों में प्रयुक्त किया जाता था।
- बागौर में द्वितीय चरण के उत्खनन में केवल 5 ताम्र उपकरण मिले हैं, जिसमें एक सूई (10.5 सेमी लम्बी), एक कुन्ताग्र (Spearhead), एक त्रिभुजाकार शस्त्र, जिसमें दो छेद हैं, प्रमुख हैं ।
- इस काल की प्राप्त हड्डियों में गाय, बैल, मृग, चीतल, बारहसिंघा, सूअर, गीदड़, कछुआ आदि के अवशेष मिले हैं।
- कुछ जली हुई हड्डियाँ व मांस के भुने जाने के प्रमाण मिलने से अनुमान है
- उत्खनन के तृतीय चरण में हड्डियों के अवशेष बहुत कम होना स्पष्ट करता है कि इस काल (500 ई. पूर्व से ईसा की प्रथम सदी) में मानव संस्कृति में कृषि की प्रधानता हो गई थी ।
- बागौर उत्खनन में कुल 5 कंकाल प्राप्त हुए हैं, जिनसे स्पष्ट होता है कि शव को दक्षिण पूर्व-उत्तर पश्चिम में लिटाया जाता था तथा उसकी टांगे मोड़ दी जाती थी।
- शव को मोती के हार, ताँबे की लटकन, मृदभाण्ड, मांस आदि सहित दफनाया जाता था।
- तृतीय चरण के एक कंकाल पर ईंटों की दीवार भी मिली है, जो समाधि बनाने की द्योतक है।
- द्वितीय चरण के मृदभाण्ड मटमैले रंग के, कुछ मोटे व जल्दी टूटने वाले थे। इनमें शरावतनें, तश्तरियाँ, कटोरे, लोटे, थालियाँ, तंग मुँह के घड़े व बोतलें आदि मिली हैं।
- ऊपर से लाल रंग लगा हुआ है। इन पर रेखाओं के अवशेष मिले हैं, परन्तु अलंकरण बहुत कम मिले हैं।
- (आभूषण: बागौर सभ्यता में मोतियों के आभूषण तीनों स्तरों के उत्खनन में प्राप्त हुए हैं। हार तथा कान की लटकनों में मोती बहुतायत से प्रयुक्त किये जाते थे।
- **मकान :** बागौर में मकानों के अवशेष द्वितीय एवं तृतीय चरण में प्राप्त हुए हैं। मकान पत्थर के बने हैं। फर्श में भी पत्थरों को समतल कर जमाया जाता था।

कांस्ययुगीन सभ्यताएं -

कालीबंगा की सभ्यता -

कालीबंगा की सभ्यता एक नदी के किनारे बसी हुई थी । नदी का नाम है – सरस्वती नदी । इसे दृषद्वती, मृतनदी, नटनदी के नाम से भी जानते हैं। यह सभ्यता हनुमानगढ़ जिले में विकसित हुई थी हनुमानगढ़ जिले में एक अन्य सभ्यता जिसे पीलीबंगा की सभ्यता कहते हैं विकसित हुई।

इस सभ्यता की खोज -

- इस सभ्यता की सबसे पहले जानकारी देने वाले एक पुरातत्ववेत्ता एवं भाषा शास्त्री एल.पी. तेस्सितौरी थे। इन्होंने ही इस सभ्यता के बारे में सबसे पहले परिचय दिया लेकिन इस सभ्यता की

तरफ किसी का पूर्णरूप से ध्यान नहीं था इसलिए इसकी खोज नहीं हो पाई।

- इस सभ्यता के खोजकर्ता अमलानंद घोष हैं। इन्होंने 1952 में सबसे पहले इस सभ्यता की खोज की थी।
- इनके बाद 1961 से 1969 तक चली थी।

1. बृजवासीलाल (बी.बी. लाल)
2. बीके (बालकृष्ण) थापर ने इस सभ्यता की विस्तृत रूप से खोज की थी

- इस सभ्यता का कालक्रम कार्बन डेटिंग पद्धति के अनुसार 2350 ईसा पूर्व से 1750 ईसा पूर्व माना जाता है।
- कालीबंगा शब्द "सिंधीभाषा" का एक शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है - "काले रंग की चूड़ियां"।
- कालीबंगा की सभ्यता भारत की ऐसी पहली सभ्यता स्थल है जो स्वतंत्रता के बाद खोजी गई थी। यह एक कांस्य युगीन सभ्यता है।
- इस सभ्यता से संबंधित जो भी वस्तुएं प्राप्त हुई है उनको सुरक्षित रखने के लिए राजस्थान सरकार के द्वारा 1985-86 में कालीबंगा संग्रहालय की स्थापना की गई थी । यह संग्रहालय हनुमानगढ़ जिले में स्थित है।

<u>इस सभ्यता की विशेषताएं –</u>

- इस सभ्यता की सड़कें एक दूसरे को समकोण पर काटती थी । इसलिए यहाँ पर मकान बनाने की पद्धति को "ऑक्सफोर्ड पद्धति" कहते हैं। इसी पद्धति को जाल पद्धति, ग्रीक, चेम्सफोर्ड पद्धति के नाम से भी जानते हैं।
- मकान कच्ची एवं पक्की ईंट के बने हुए थे, आरम्भ में यें कच्ची ईंटें थीं इसलिए इस सभ्यता को दीन हीन सभ्यता भी कहते हैं । इन ईंटों का आकार 30×15×7.5 है ।
- इन मकानों की खिड़की एवं दरवाजे पीछे की ओर होते थे ।
- यहाँ पर जो नालियां बनी हुई थी वह लकड़ी (काष्ठ) की बनी होती थी। आगे चलकर इन्हीं नालियों का निर्माण पक्की ईंटों से होता था
- विश्व की प्राचीनतम जुते हुए खेत के प्रमाण इसी सभ्यता से मिले हैं।
- यहाँ के लोग एक साथ में दो फसलें करते थे जौ और गेहूं।
- यहाँ पर उत्खनन के दौरान यज्ञकुंड / अग्नि वेदिकाएं प्राप्त हुए हैं यहाँ के लोग बलिप्रथा में भी विश्वास रखते थे।
- इस सभ्यता के लोगों का जानवर कुत्ता भी पालतू जीव था। इस सभ्यता के लोग ऊंट से भी परिचित थे इसके अलावा गाय, भैंस, बकरी, घोड़ा से भी परिचित थे ।
- विश्व में प्राचीनतम नगर के प्रमाण यहीं पर मिले हैं इसलिए इसे नगरीय सभ्यता भी कहते हैं
- स्वास्तिक चिह्न का प्रमाण इसी कालीबंगा सभ्यता से प्राप्त होता है इस स्वास्तिक चिह्न का प्रयोग यहाँ के लोग वास्तुदोष को दूर करने के लिए करते थे ।
- कालीबंगा की सभ्यता और मेसोपोटामिया की सभ्यता की समानता के प्रमाण बेलनाकार बर्तन में मिलते हैं।
- यहाँ पर एक कपाल मिला है जिसमें छः प्रकार के छेद थे। अर्थात् शल्य चिकित्सा के प्राचीनतम प्रमाण इसी सभ्यता से मिले हैं ।
- यहाँ पर एक सिक्का प्राप्त हुआ है जिसके एक ओर स्त्री का चित्र है तथा दूसरी ओर चीता का चित्र बना हुआ है अर्थात् अनुमान लगाया जा सकता है कि यहाँ पर परिवार की मातृसत्तात्मक प्रणाली का प्रचलन था।
- कालीबंगा सभ्यता को सिंधु सभ्यता की तीसरी राजधानी कहा जाता है।
- कालीबंगा सभ्यता में पुरोहित का प्रमुख स्थान होता था।
- इस सभ्यता के लोग मध्य एशिया से व्यापार करते थे,

कालीबंगा वासियों का सामाजिक जीवनः

- उत्खनन से अनुमान लगाया जाता है कि कालीबंगा के समाज में धर्मगुरु (पुरोहित), चिकित्सक, कृषक, कुंभकार, बढ़ई, सुनार, दस्तकार, जुलाहे, ईंट एवं मनके निर्माता, मुद्रा (मोहरें) निर्माता, व्यापारी आदि धन्धों के लोग निवास करते थे।
- कालीबंगा वासियों के नागरिक जीवन में त्यौहार एवं धार्मिक उत्सवों का पर्याप्त महत्त्व था। संभवतः ये शाकाहारी एवं मांसाहारी दोनों होते थे।

- **मृतक संस्कार :**
  कालीबंगा के निवासियों की तीन प्रकार की समाधियाँ (कब्रें) मिली हैं ।
- शवों को अण्डाकार गड्ढे में उत्तर की ओर सिर रखकर मृत्यु संबंधी उपकरणों के साथ गाड़ते थे।

- गणेश्वर में बस्ती को बाढ़ से बचाने हेतु वृहदाकार पत्थर के बाँध बनाने के प्रमाण मिले हैं ।
- मिट्टी के छल्लेदार बर्तन केवल गणेश्वर में ही प्राप्त हुए हैं ।
- गणेश्वर सभ्यता के उत्खनन से दोहरी पेचदार शिरेवाली ताम्र पिन भी प्राप्त हुई है ।
- गणेश्वर सभ्यता के लोग गाय, बैल, बकरी, सुअर, कुत्ता, गधा आदि पालते थे ।

गणेश्वर सभ्यता को 'ताम्र संचयी संस्कृति' भी कहा जाता है ।

बालाथल (उदयपुर)

- यह सभ्यता उदयपुर जिले में बालाथल गाँव के पास बेड़च नदी के निकट एक टीले के उत्खनन से यहाँ ताम्र-पाषाणकालीन सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- बालाथल सभ्यता की खोज 1962-63 में डॉ. वी. एन. मिश्र द्वारा की गई।
- डॉ. वी. एस. शिंदे, आर. के. मोहन्ते, डॉ. देव कोठारी एवं डॉ. ललित पाण्डे का सम्बन्ध इसी सभ्यता से माना जाता है। इन्होंने 1993 में इस सभ्यता का उत्खनन का कार्य किया था।
- बालाथल में उत्खनन से एक 11 कमरों के विशाल भवन के अवशेष प्राप्त हुए हैं ।
- बालाथल से लौहा गलाने की 5 भट्टियाँ प्राप्त हुई हैं।
- बालाथल से कपड़े का टुकड़ा प्राप्त हुआ है।
- बालाथल के उत्खनन में मिट्टी से बनी सांड की आकृतियाँ मिली हैं।
- यहाँ के लोग कृषि, शिकार तथा पशुपालन आदि से परिचित थे।
- बालाथल से प्राप्त बैल व कुत्ते की मृण्मूर्तियां विशेष उल्लेखनीय है।
- बालाथल निवासी माँसाहारी भी थे।
- इस सभ्यता के लोग बर्तन बनाने तथा कपड़ा बुनने के बारे में जानकारी रखते थे।
- यहाँ से 4000 वर्ष पुराना कंकाल मिला है जिसको भारत में कुष्ठ रोग का सबसे पुराना प्रमाण माना जाता है।
- यहाँ से योगी मुद्रा में शवाधान का प्रमाण प्राप्त हुआ है।
- बालाथल में अधिकांश उपकरण तांबे के बने प्राप्त हुए हैं। यहाँ से तांबे के बने आभूषण भी प्राप्त हुए हैं।

बैराठ (जयपुर) :

- बैराठ जयपुर जिले में शाहपुरा उपखण्ड में बाण गंगा नदी के किनारे स्थित लौह युगीन स्थल है।
- बैराठ का प्राचीन नाम "विराट नगर" ' था। महाजनपद काल में यह मत्स्य जनपद की राजधानी था।
- यहाँ पर उत्खनन कार्य वर्ष 1936-37 में दयाराम साहनी द्वारा तथा 1962-63 में नीलरत्न बनर्जी तथा कैलाश नाथ दीक्षित द्वारा किया गया।
- वर्ष 1837 में कैप्टन बर्ट ने यहाँ से मौर्य सम्राट अशोक के भाब्रू शिलालेख की खोज की । वर्तमान में यह शिलालेख कलकत्ता संग्रहालय में सुरक्षित है।
- भाब्रू शिलालेख में सम्राट अशोक को मगध का राजा 'नाम से संबोधित किया गया है।
- भाब्रू शिलालेख के नीचे बुद्ध, धम्म एवं संघ लिखा हुआ है।
- बैराठ में बीजक की पहाड़ी, भीम जी की डूंगरी तथा महादेव जी की डूंगरी से उत्खनन कार्य किया गया ।
- यहाँ से 36 मुद्राएँ प्राप्त हुई है, जिनमें 8 पंचमार्क चाँदी की तथा 28 इण्डो-ग्रीक तथा यूनानी शासकों की है । 16 मुद्राएँ यूनानी शासक मिनेण्डर की है।
- वर्ष 1999 में बीजक की पहाड़ी से अशोक कालीन गोल बौद्ध मंदिर, स्तूप एवं बौद्ध मठ के अवशेष मिले हैं जो हीनयान सम्प्रदाय से संबंधित है ।
- बैराठ सभ्यता के लोगों का जीवन पूर्णतः ग्रामीण संस्कृति का था।
- बैराठ में पाषाण कालीन हथियारों के निर्माण का एक बड़ा कारखाना स्थित था ।
- बैराठ सभ्यता के लोग लौह धातु से परिचित थे । यहाँ उत्खनन से लौहे के तीर तथा भाले प्राप्त हुए हैं ।
- माना जाता है कि हूण शासक मिहिर कुल ने बैराठ को नष्ट कर दिया ।
- 634 ई. में ह्वेनसांग विराट नगर आया था तथा उसने यहाँ बौद्ध मठों की संख्या 8 बताई है ।
- बैराठ से 'शंखलिपि' के प्रमाण प्रचुर मात्रा में प्राप्त हुए हैं ।
- यहाँ से मुग़ल काल में टकसाल होने के प्रमाण मिलते हैं । यहाँ मुग़ल काल में ढाले गये सिक्कों पर बैराठ अंकित' मिलता है।
- यहाँ बनेड़ी, ब्रह्मकुण्ड तथा जीण गोर की पहाड़ियों से वृषभ, हिरण तथा वनस्पति का चित्रण प्राप्त होता है ।

अन्य सभ्यताएँ

गिलूण्ड (राजसमंद) :

- यह ताम्र युगीन सभ्यता राजसमंद जिले में बनास नदी के तट पर स्थित है।
- मोडियामगरी नामक टीले का संबंध गिलूण्ड सभ्यता से है।
- वर्ष 1957-58 में बी. बी. लाल द्वारा यहाँ पर उत्खनन कार्य करवाया गया।
- यहाँ पर पकी हुई ईंटों के प्रयोग के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- यहाँ पर उत्खनन से ताम्र युगीन सभ्यता एवं बाद की सभ्यताओं के अवशेष मिले हैं।
- यहाँ पर आहड़ सभ्यता का प्रसार था तथा इसी के समय यहाँ मृदभाण्ड, मिट्टी की पशु आकृतियां आदि के चित्र मिले हैं।
- गिलूण्ड के मृदभाण्डों पर ज्यामितीय चित्रांकन के अलावा प्राकृतिक चित्रांकन भी किया गया है।
- गिलूण्ड में उच्च स्तरीय जमाव में क्रीम रंग एवं काले रंग से चित्रित पात्रों पर चिकतेदार हिरण प्रकाश में आए हैं।
- गिलूण्ड में लाल एवं काले रंग के मृदभाण्ड मिले हैं।

रंगमहल (हनुमानगढ़) :

- रंगमहल हनुमानगढ़ जिले में सरस्वती (वर्तमान में घग्घर) नदी के पास स्थित है।
- यह एक ताम्र युगीन सभ्यता है।
- यहाँ पर उत्खनन कार्य डॉ. हन्नारिड के निर्देशन में स्वीडिश दल द्वारा 1952-54 ई. में किया गया।
- यहाँ से कुषाण कालीन तथा उससे पहले की 105 ताँबे की मुद्राएँ प्राप्त हुई है जिनमें कुछ पंचमार्क मुद्राएँ भी है।
- यहाँ से ब्राह्मी लिपि में नाम अंकित दो कांसे की सीलें भी प्राप्त हुई है।
- यहाँ से उत्खनन में डॉ. हन्नारिड को प्राप्त मिट्टी का कटोरा स्वीडन के लूण्ड संग्रहालय में सुरक्षित है।
- यहाँ से गांधार शैली की मृण मूर्तियाँ, टोंटीदार घड़े, घण्टाकार मृदपात्र एवं कनिष्क कालीन मुद्राएँ प्राप्त हुई हैं।
- रंग महल से ही गुरु-शिष्य की मिट्टी की मूर्ति प्राप्त हुई है।

ओझियाना (भीलवाड़ा) :

- भीलवाड़ा के बदनोर के पास खारी नदी के तट पर स्थित यह स्थल ताम्र युगीन आहड़ संस्कृति से संबंधित है।
- इस स्थल का उत्खनन बी. आर. मीणा तथा आलोक त्रिपाणी द्वारा वर्ष 1999-2000 में किया गया।
- यहाँ से वृषभ तथा गाय की मृण्मय मूर्तियां प्राप्त हुई है जिन पर सफेद रंग से चित्रण किया हुआ है।

नगरी (चित्तौड़गढ) :

- नगरी नामक पुरातात्विक स्थल चित्तौड़गढ़ में बेड़च नदी के तट पर स्थित है, जिसका प्राचीन नाम माध्यमिका मिलता है।
- यहाँ पर सर्वप्रथम उत्खनन कार्य वर्ष 1904 में डॉ. डी. आर. भण्डारकर द्वारा तथा तत्पश्चात 1962-63 में केन्द्रीय पुरातत्व विभाग द्वारा करवाया गया।
- प्राचीन नाम 'माध्यमिका' पतंजलि के महाभाष्य में मिलता है।
- यहाँ से ही घोसूण्डी अभिलेख (द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व) प्राप्त हुआ है।
- नगरी शिवि जनपद की राजधानी रही है।
- नगरी की खोज 1872 ई. में कार्लाइल द्वारा की गई।
- यहाँ से चार चक्राकार कुएँ भी प्राप्त हुए हैं।

सुनारी (झुंझुनू) :

- सुनारी नामक पुरातात्विक स्थल झुंझुनू की खेतड़ी तहसील में काँतली नदी के किनारे स्थित है।
- यहाँ पर उत्खनन कार्य 1980-81 में राजस्थान राज्य पुरातत्व विभाग द्वारा करवाया गया।
- यहाँ से लौहा गलाने की प्राचीनतम भट्टियाँ प्राप्त हुई है।
- सुनारी से मातृ देवी की मृण मूर्तियाँ तथा धान संग्रहण का कोठा प्राप्त हुआ है।
- सुनारी से मौर्य कालीन सभ्यता के अवशेष मिले हैं
- जोधपुरा, नोह तथा सुनारी से शुंग तथा कुषाण कालीन अवशेष भी प्राप्त हुए हैं।
- सुनारी से लौहे के तीर, भाले के अग्रभाग, लौहे का कटोरा तथा कृष्ण परिमार्जित मृदपात्र भी मिले हैं।

जोधपुरा (जयपुर) :

- जोधपुरा नामक पुरातात्विक स्थल जयपुर जिले की कोटपुतली तहसील में साबी नदी के किनारे स्थित है।

संधि की शर्तें

1. कम्पनी सरकार व कोटा राज्य के मध्य पारस्परिक मित्रता एवं सद्भावना सदैव बनी रहेगी।

2. एक पक्ष का मित्र एवं शत्रु दूसरे पक्ष का भी मित्र एवं शत्रु होगा।

3. कम्पनी सरकार कोटा राज्य को सैनिक प्रदान करेगी एवं आवश्यकता पड़ने पर कोटा राज्य द्वारा कम्पनी सरकार को सैनिक सहायता प्रदान करेगा।

4. कोटा राज्य कम्पनी सरकार की अनुमति के बिना किसी अन्य शक्ति से युद्ध एवं मैत्री संधि नहीं करेगा।

5. कोटा महाराव एवं उसके उत्तराधिकारी किसी अन्य शक्ति से विवाद होने पर अंग्रेजों को मध्यस्थ बनाएंगे।

6. कोटा राज्य मराठों को जो खिराज देता था, वह अब कम्पनी सरकार को देगा।

7. कोटा के महाराव एवं उनके उत्तराधिकारी अपने राज्य के शासक बने रहेंगे। कम्पनी उनके आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगी।

8. कोटा महाराव और उसके उत्तराधिकारी सदैव अंग्रेज सरकार की अधीनता में रहते हुए उसे सहयोग देते रहेंगे।

20 फरवरी, 1818 को झाला जालिमसिंह द्वारा अंग्रेजों से पूरक संधि कर दो नयी शर्तें जोड़ी गई।

राजस्थान में 1857 की क्रांति में हुए प्रमुख विद्रोह

- कर्नल जेम्स टॉड पहला व्यक्ति था जिसने राजस्थान का सर्वप्रथम सुव्यवस्थित इतिहास लिखा इसीलिए कर्नल जेम्स टॉड को राजस्थान के इतिहास का पिता कहा जाता है।
- इतिहासकार गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने कर्नल जेम्स टॉड के इतिहास लेखन की गलतियों को दूर किया इसीलिए गौरीशंकर हीराचंद ओझा को राजस्थान के इतिहास का वैज्ञानिक पिता कहा जाता है।
- घोड़े वाले बाबा उपनाम से इतिहास में प्रसिद्ध कर्नल जेम्स टॉड के गुरु ज्ञानचंद थे। कर्नल जेम्स टॉड ने पृथ्वीराज रासो के लगभग 30000 हजार दोहो, का अंग्रेजी में अनुवाद किया था।
- ब्रिटिश सरकार ने कर्नल जेम्स टॉड को 1818 से 1822 के मध्य पश्चिमी राजपूत राज्यों का पॉलिटिकल एजेंट नियुक्त किया जिसमें 6 रियासतें शामिल थी
- 1-कोटा 2- बूँदी 3-जोधपुर 4-उदयपुर 5-सिरोही 6-जैसलमेर
- 1857 के विद्रोह के संदर्भ में विभिन्न मत (Different views in reference to the revolt of 1857)
  - डॉ. रामविलास शर्मा- यह स्वतंत्रता संग्राम था।
  - डॉ. रामविलास शर्मा– यह जनक्रांति थी।
  - डिजरायली बेंजामिन डिजरैली – यह राष्ट्रीय विद्रोह था।
  - वी. डी. सावरकर- यह स्वतंत्रता की पहली लड़ाई थी (पुस्तक द इंडियन वॉर ऑफ इंडिपेंडेंस)।
  - एस.एन. सेन- यह विद्रोह राष्ट्रीयता के अभाव में स्वतंत्रता संग्राम था।
  - सर जॉन लॉरेंस, के. मैलेसन, ट्रैविलियन, सीले- 1857 की क्रांति एक सिपाही विद्रोह था (इस विचार से भारतीय समकालीन लेखक मुंशी जीवनलाल दुर्गादास बंदोपाध्याय सैयद अहमद खाँ भी सहमत है।)
  - जवाहरलाल नेहरु - यह विद्रोह मुख्यतः सामन्तशाही विद्रोह था।
  - सर जेम्स आउट्रम और डब्लयू टेलर ने इसको - यह विद्रोह हिंदू-मुस्लिम का परिणाम था कहा है।
  - क्रांति के प्रमुख कारण (Reason of 1857 Revolution)
  - देशी रियासतों के राजा मराठा व पिण्डारियों से छुटकारा पाना चाहते थे।
  - लॉर्ड डलहौजी की राज्य विलय की नीतियाँ।
  - चर्बी लगे कारतुस का प्रयोग (एनफील्ड)।
  - 1857 के विद्रोह का प्रारंभ 29 मार्च 1857 को बैरकपुर छावनी (पश्चिम बंगाल) की 34वीं नेटिव इन्फेंट्री के सिपाही मंगल पांडे के विद्रोह के साथ हुआ किन्तु संगठित क्रांति 10 मई 1857 को मेरठ (उत्तर प्रदेश) छावनी से प्रारंभ हुई थी।
  - 1857 की क्रांति का तत्कालीन कारण चर्बी वाले कारतूस माने जाते हैं, जिनका प्रयोग एनफील्ड राइफल में किया जाता था। इस रायफल के बारे में भारतीय सैनिकों में अफवाह फैली की इनमें लगने वाले कारतूसों में गाय तथा सूअर की चर्बी लगी होती है।
  - कारतूस का प्रयोग करने से पूर्व उसके खोल को मुंह से उतरना पड़ता था जिससे हिंदू तथा मुस्लिमों

का धर्म भ्रष्ट होता है। परिणाम स्वरूप 1857 का विद्रोह प्रारंभ हुआ।

- 1857 की क्रांति के समय राजपूताना उत्तरी पश्चिमी सीमांत प्रांत के प्रशासनिक नियंत्रण में था जिसका मुख्यालय आगरा में था इस प्रांत का लेफ्टिनेंट गवर्नर कोलविन था।
- अजमेर- मेरवाड़ा का प्रशासन कर्नल डिक्सन के हाथों में था क्रांति के समय राजपुताना का ए.जी.जी जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस था जिस का मुख्यालय माउंट आबू में स्थित था अजमेर राजपूताना की प्रशासनिक राजधानी था और अजमेर में ही अंग्रेजों का खजाना और शस्त्रागार स्थित था।
- अजमेर की रक्षा की जिम्मेदारी 15वीं नेटिव इन्फैंट्री बटालियन के स्थान पर ब्यावर से बुलाई गई, लेफ्टिनेंट कारनेल के नेतृत्व वाली रेजिमेंट को दे दी गई मेरठ विद्रोह की खबर 19 मई 1857 को माउंट आबू पहुंची।

इस क्रांति का प्रतीक चिह्न रोटी और कमल का फूल था

राजस्थान में क्रांति के समय पॉलिटिकल एजेंट (Rajasthan Political agent in evolution)

1. कोटा रियासत में - मेजर बर्टन
2. जोधपुर रियासत में - मेक मैसन
3. भरतपुर रियासत में - मोरिशन
4. जयपुर रियासत में – कर्नल ईडन
5. उदयपुर रियासत में - शावर्स और
6. सिरोही रियासत में - जे.डी.हॉल थे

राजस्थान में क्रांति के समय राजपूत शासक (Rajasthan Rajput ruler in revolution)–

- कोटा रियासत में - रामसिंह
- जोधपुर रियासत में - तख्तसिंह
- भरतपुर रियासत में - जसवंत सिंह
- उदयपुर रियासत में - स्वरूप सिंह
- जयपुर रियासत में - रामसिंह द्वितीय
- सिरोही रियासत में - शिव सिंह
- धौलपुर रियासत में - भगवंत सिंह
- बीकानेर रियासत में - सरदार सिंह
- करौली रियासत में - मदनपाल
- टोंक रियासत में - नवाब वजीरुद्दौला
- बूँदी रियासत में - रामसिंह
- अलवर रियासत में - विनयसिंह
- जैसलमेर रियासत में – रणजीत सिंह
- झालावाड रियासत में – पृथ्वीसिंह
- प्रतापगढ़ रियासत में – दलपत सिंह
- बाँसवाड़ा रियासत में - लक्ष्मण सिंह और
- डूंगरपुर रियासत में - उदयसिंह थे।

राजस्थान में क्रांति के समय 6 सैनिक छावनियां थी जिनमें से खेरवाड़ा (उदयपुर) और ब्यावर (अजमेर) सैनिकों ने विद्रोह में भाग नहीं लिया था।

सैनिक छावनियां (Military Encampment)

1. नसीराबाद (अजमेर)
2. नीमच (मध्य प्रदेश)
3. एरिनपुरा (पाली)
4. देवली (टोंक)
5. ब्यावर (अजमेर)
6. खेरवाड़ा (उदयपुर)

NOTE – खैरवाड़ा व ब्यावर सैनिक छावनीयों ने इस सैनिक विद्रोह में भाग नहीं लिया।

राजस्थान में 1857 की क्रांति का आरम्भ

- 1857 Revolution के समय भारत का गवर्नर जनरल " लॉर्ड केनिंग " था।
- जब AGG जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस को मेरठ में सैनिक क्रांति की सूचना मिली तब वह माउन्ट आबू में था।
- AGG को मेरठ में क्रांति की सूचना 19 मई 1857 को मिली।
- जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस ने अजमेर के मैंगजीन दुर्ग में तैनात 15 वीं नेटिव इन्फेन्ट्री (NI) को नसीराबाद भेज दिया।
- मैंगजीन दुर्ग में अंग्रेजों का शस्त्रागार तथा सरकारी खजाना रखा हुआ था।
- इस दुर्ग का नाम अकबर द्वारा रखा गया था।
- AGG ने देशी राजाओं को पत्र लिखकर 1817-1818 की सहायक संधियों का स्मरण कराया तथा क्रांति के दमन हेतु सहयोग माँगा।
- 1857 की क्रांति के समय राजपूताना उत्तर-पश्चिम सीमा प्रान्त के प्रशासनिक नियंत्रण में था।

- उत्तर-पश्चिम सीमा प्रान्त का मुख्यालय आगरा में था और इस प्रान्त का लेफ्टिनेंट गवर्नर कोलवीन था।

नसीराबाद में क्रांति

- राजस्थान में 1857 की क्रांति का बिगुल नसीराबाद छावनी के सैनिकों ने बजाया।
- यहाँ अजमेर से अचानक भेजी गई 15 वीं नेटिव इन्फेंट्री के सैनिकों में असन्तोष व्याप्त हो गया था । इसके अतिरिक्त सरकार ने चर्बी वाले कारतूसों का विरोध होने के कारण इसके प्रयोग को बंद करने के आदेश दिए जिससे सैनिकों का संदेह और भी दृढ हो गया ।
- 30 वीं नेटिव इन्फेंट्री यहाँ पहले से ही तैनात थी।
- 28 मई 1857 को 15 वीं नेटिव इन्फेंट्री के सैनिकों ने विद्रोह कर अपने अधिकारी प्रिचार्ड का आदेश मानने से इन्कार कर दिया।
- विद्रोही सैनिकों ने छावनी में मौजूद अंग्रेजों के मेजर स्पोटिस वुड तथा न्यूबरी की हत्या कर दी और दिल्ली कूच कर गए।
- बख्तावर सिंह द्वारा यहाँ विद्रोहियों का नेतृत्व किया गया।
- लेफ्टिनेंट माल्टर, व लेफ्टिनेंट हेथकोट के नेतृत्व में मेवाड़ के सैनिकों ने विद्रोहियों का पीछा किया लेकिन असफल रहे।

नीमच में क्रांति

- 2 जून 1857 को नीमच में कर्नल एबॉट ने हिन्दु व मुस्लिम सैनिकों को अंग्रेजों के प्रति वफादारी के लिए गीता व कुरान की शपथ दिलाई।
- अवध के एक सैनिक मोहम्मद अली बेग ने इसका विरोध किया ओर कर्नल एबॉट की हत्या कर दी।
- 3 जून 1857 को नीमच छावनी में क्रांति भड़क गई । यहाँ हीरालाल द्वारा नेतृत्व प्रदान किया गया।
- यहाँ मौजूद 40 अंग्रेजों ने भागकर डूंगला गाँव में रंगाराम किसान के यहाँ शरण ली।
- मेवाड़ के सैनिक इन्हें उदयपुर ले गये जहाँ महाराणा स्वरूप सिंह ने इन्हें जगमंदिर पैलेस में ठहराया।
- राजस्थान में 1857 की क्रांति के दमन में अंग्रेजों का साथ देने वाला राजपूताने का पहला शासक मेवाड़ का स्वरूप सिंह था।
- नीमच के विद्रोही सैनिकों ने आगरा पहुँचकर वहाँ जेल में बन्द कैदियों को मुक्त कर दिया। विद्रोहियों ने आगरा के सरकारी खजाने से एक लाख छब्बीस हजार रुपये लूट लिये।
- नीमच के सैनिकों ने देवली छावनी होते हुए दिल्ली कूच किया।
- शाहपुरा के शासक लक्ष्मण सिंह ने नीमच के विद्रोही सैनिकों को सहायता व शरण दी।

एरिनपुरा में क्रांति

- राजस्थान में 1857 की क्रांति में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका एरिनपुरा छावनी के सैनिकों ने निभाई।
- जोधपुर लीजन की इस टुकड़ी ने 21 अगस्त 1857 को यहाँ के सैनिकों ने आबू में विद्रोह कर दिया।
- यहाँ पर शिवसिंह, शीतल प्रसाद, मोती खाँ तथा तिलकराम ने सैनिकों को नेतृत्व प्रदान किया।
- इस छावनी के सैनिकों ने ही शिवसिंह के नेतृत्व में " चलो दिल्ली मारो फिरंगी " का नारा दिया था। यह नारा लगाते हुए यह लोग दिल्ली की ओर चल पड़े ।
- एरिनपुरा छावनी जोधपुर रियासत के अन्तर्गत थी।
- वर्तमान में एरिनपुरा पाली जिले में हैं।
- मारवाड़ रियासत की सैनिक टुकड़ी" जोधपुर लीजन " AGG की सुरक्षा में माउन्ट आबू में तैनात थी।
- जोधपुर लीजन के सैनिकों ने एक अंग्रेज अलेक्जेंडर की हत्या कर दी और एरिनपुरा आकर विद्रोह कर दिया।
- यहाँ से सैनिक क्रांति के मुख्य केन्द्र दिल्ली रवाना हो गए।
- जब इसकी खबर आऊवा के असंतुष्ट जागीदार कुशालसिंह चंपावत को लगी तो वह खेरवा गाँव में विद्रोहियों से आ मिला।
- अब आऊवा राजस्थान में 1857 की क्रांति का प्रमुख केन्द्र बन गया ।

आऊवा की क्रांति

- आऊवा मारवाड़ रियासत (जोधपुर) का ठिकाना था।
- यहाँ के जागीरदार कुशालसिंह व मारवाड़ के शासक तख्तसिंह के बीच अनबन थी।
- तख्तसिंह ने आऊवा के विद्रोह को कुचलने के लिए अपने सेनापति अनाड़सिंह के नेतृत्व में सेना भेजी।
- अनाड़सिंह / अनारसिंह के साथ अंग्रेज सेनापति लेफ्टिनेंट हीथकोट (हैटकोच) भी था।

नोट – प्रिय उम्मीदवारों, यहाँ हमने केवल SAMPLE ही दिया है, पूरा टॉपिक नही दिया है। यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये हमारे संपर्क नंबर पर कॉल कीजिए या लिंक पर क्लिक करें। दोस्तों, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी "राजस्थान 3rd Grade Level – I (REET मुख्य परीक्षा)" में पूर्ण संभव मदद करेंगे और आप "INFUSION NOTES" के साथ इस परीक्षा में जरूर सफल होंगे, धन्यवाद।

संपर्क करें – 9694804063, 9887809083, 8233195718, 8504091672

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
REET (लेवल -I, 2)	2021	98 (150 में से)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)

FREE SAMPLE

राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

& Many More Exams like REET, UPSC, SSC Etc.

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

FREE SAMPLE

संपर्क करें- 9887809083, 8233195718, 9694804063, 8504091672

ONLINE ORDER के लिए OFFICIAL WEBSITE	Website- https://bit.ly/l1-3rd-grade-notes
PHONE NUMBER	+918504091672 9887809083 +918233195718 9694804063
TELEGRAM CHANNEL	https://t.me/infusion_notes
FACEBOOK PAGE	https://www.facebook.com/infusion.notes
WHATSAPP करें	https://wa.link/hx3rcz

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 6

राजस्थान में जनजाति एवं किसान आंदोलन

राजस्थान में आजादी से पूर्व कई किसान एवं आदिवासी आंदोलन हुए जो उन पर किये जा रहे अत्याचारों के विरोध में हुए । राजस्थान में कई रियासतें किसानों से मनमाना कर "लाग" वसूलती थी । इनके विरोध में समय-समय पर किसान नेताओं ने राजस्थान में किसान आंदोलन किये । इसी तरह आदिवासियों के ऊपर हुए अत्याचारों के विरोध में भी कई आंदोलन हुए जिनका नेतृत्व आदिवासी नेताओं ने किया जो राजस्थान में आदिवासी आंदोलन या किसान आंदोलन के रूप में जाने गए ।

बिजौलिया किसान आंदोलन

बिजौलिया किसान आंदोलन राजस्थान से शुरू होकर पुरे देश में फैलने वाला एक संगठित किसान आंदोलन था । बिजौलिया किसान आंदोलन इतिहास का सबसे लम्बा चलने वाला अहिंसक किसान आंदोलन था, जोकि करीब ५५ साल तक चला ।

बिजौलिया किसान आंदोलन (1897-1941 55 वर्षों तक) -

जिला भीलवाड़ा

बिजौलिया का प्राचीन नाम विजयावल्ली था ।

संस्थापक अशोक परमार

बिजौलिया, मेवाड़ रियासत का ठिकाना था।

कारण

1. लगान की दरें अधिक थीं ।

2. लाग-बाग कई तरह के थे।

3. बेगार प्रथा का प्रचलन था।

बिजौलिया किसानों से ४५ प्रकार का लाग-बाग (टेक्स) वसुल किया जा जाता था।

बिजौलिया के किसान लोगों में धाकड़ जाति के लोग अधिक थे।

बिजौलिया किसान आंदोलन तीन चरणों में पुरा हुआ था।

1. 1897 से 1916 नेतृत्व - साधु सीताराम दास

2. 1916 से 1923 नेतृत्व - विजयसिंह पथिक

3. 1923 से 1941 नेतृत्व – माणिक्य लाल वर्मा, हरिभाऊ उपाध्याय जमनालाल बजाज, रामनारायण चौधरी

प्रथम चरण (1897 से 1916 तक) से

- 1897 में बिजौलिया के किसान गंगाराम धाकड़ के मृत्युभोज के अवसर पर गिरधारीपूरा गांव से एकत्रित होते और ठिकानेदार की शिकायत मेवाड़ के महाराणा से करने का निश्चिय करते हैं। और नानजी पटेल व ठाकरी पटेल को उदयपुर भेजा जाता है जहां मेवाड़ के महाराणा फतेहसिंह ने कोई भी कार्यवाही नहीं की। इस समय बिजौलिया के ठिकानेदार रावकृष्ण सिंह ने 1903 में किसानों पर चंवरी कर लगाया।
- चंवरी कर एक विवाह कर था, इसकी दर 5 रुपये थी। 1906 में कृष्णसिंह मर गया और नये ठिकानेदार राव पृथ्वीसिंह बने जिन्होंने तलवार बंधाई कर (उत्तराधिकारी शुल्क किसानों पर लागु कर दिया)।
- 1915 में पृथ्वी सिंह ने साधु सीताराम दास व इसके सहयोगी फतहकरण चारण व ब्रह्मदेव को बिजौलिया से निष्कासित कर दिया।

द्वितीय चरण (1916 से 1923 तक)

- 1917 में विजयसिंह पथिक ने ऊपरमाल पंचबोर्ड (ऊपरमाल पंचायत) का गठन मन्ना पटेल की अध्यक्षता में किया । बिजौलिया किसान आंदोलन को लोकप्रिय व प्रचलित करने वाले समाचार पत्र प्रताप 2. ऊपरमाल डंका थे ।
- 1919 में बिन्दुलाल भट्टाचार्य आयोग को बिजौलिया किसान आंदोलन की जांच के लिए भेजा जाता है। इस आयोग ने लगान की दरें कम करने तथा लाग-बागों को हटाने की सिफारिश की किन्तु मेवाड़ के महाराणा ने इसकी कोई भी सिफारिश स्वीकार नहीं की।
- 1922 में राजपुताना का ए.जी.जी. रॉबर्ट हॉलेण्ड बिजौलिया आते हैं और किसानों और ठिकानेदार के मध्य समझौता करवाते हैं यह समझौता स्थाई सिद्ध नहीं हुआ।

- 1923 में विजय सिंह पथिक को गिरफ्तार कर लिया जाता है और 6 वर्ष की सजा सुना दी जाती है।

तृतीय चरण (1923 से 1941)

- 1941 में मेवाड़ के प्रधानमंत्री सर टी. विजयराघवाचार्य थे इन्होंने अपने राजस्व मंत्री डॉ. मोहन सिंह मेहता को बिजौलिया भेजा इसने ठिकानेदार व किसानों के मध्य समझौता किया लगान की दरें कम कर दी अनेक लाग-बाग हटा दिये और बेगार प्रथा को समाप्त कर दिया ।
- यह किसान आंदोलन सफलता पूर्वक समाप्त होता है ।
- इस किसान आंदोलन में दो महिलाओं रानी भीलनी व उदी मालन ने भाग लिया था ।
- किसान आंदोलन के समय माणिक्यलाल वर्मा ने पंछीड़ा गीत लिखा था ।
- **बेंगू (चित्तौड़गढ़) किसान आंदोलन**
- बेंगू (चित्तौड़गढ़) मेवाड़ राज्य का ठिकाना था।
- बेंगू के किसानों ने अपने यहाँ लाग-बाग, बेगार और ऊँचे लगान के विरुद्ध 1921 ई. में मेनाल (भीलवाड़ा) नामक स्थान पर आंदोलन शुरू किया।
- इसका नेतृत्व रामनारायण चौधरी ने किया।
- 1922 में मंडावरी में किसान आंदोलन को गोलियों की बौछार से तितर-बितर किया गया। यहाँ सिपाहियों की गोलियों का शिकार खुद एक सिपाही फेज खाँ हुआ।
- किसानों के विरोध के आगे ठाकुर अनूप सिंह को झुकना पड़ा और राजस्थान सेवा संघ और अनूप सिंह के बीच समझौता हो गया।
- मेवाड़ सरकार ने इस समझौते को बोल्शेविक संधि कहकर अनूपसिंह को उदयपुर में नजरबंद कर दिया।
- 13 जुलाई, 1923 को गोविन्दपुरा में किसान सम्मेलन पर सरकार ने गोलियां चलवायी जिसमें रूपाजी व कृपाजी नामक किसान मारे गये।
- बेंगू में किसानों की शिकायतों की जाँच हेतु सरकार ने बंदोबस्त आयुक्त श्री ट्रेन्च की अध्यक्षता में आयोग का गठन किया।
- सेटलमेन्ट कमिश्नर टेन्च की दमनकारी कार्यवाही से विजयसिंह पथिक पकड़े गये तथा उन्हें 3.5 वर्ष कठोर कारावास की सजा भुगतनी पड़ी।

बूँदी का किसान आंदोलन

राजस्थान में भूमि बंदोबस्त व्यवस्था के बावजूद भी गावों में धीरे-धीरे महाजनों का वर्चस्व बढ़ने लगा । 'साद' प्रथा के अंतर्गत प्रत्येक क्षेत्र में महाजन से लगान की अदायगी का आश्वासन लिया जाने लगा । इस व्यवस्था से किसान अधिकाधिक रूप से महाजनों पर आश्रित होने लगे तथा उनके चंगुल में फंसने लगे। 19 वीं सदी के अंत में व 20 वीं सदी के शुरू में जागीरदारों द्वारा किसानों पर नए-नए कर लगाये जाने लगे और उनसे बड़ी धनराशि एकत्रित की जाने लगी। जागीरदारी व्यवस्था शोषणात्मक हो गई। किसानों से अनेक करों के अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के लाग-बाग लेने की प्रथा भी प्रारंभ हो गई। ये लागें दो प्रकार की थी।

1. स्थाई लाग

2. अस्थाई लाग (इन्हें कभी-कभी लिया जाता था।)

इस कारण से जागीर क्षेत्र में किसानों की स्थिति अत्यंत दयनीय हो गई जिसके कारण किसानों में रोष उत्पन्न हुआ तथा वे आंदोलन करने को उतारू हो गए।

- बिजौलिया, बेंगू और अन्य क्षेत्र के किसानों के समान ही बूँदी राज्य के किसानों को भी अनेक प्रकार की लागतों (लगभग 25%), बेगार एवं ऊँची दरों पर लगान की रकम देनी पड़ रही थी।
- बूँदी राज्य में वसूले जा रहे कई करों के अलावा । रुपये पर । आने की दर से स्थाई रूप से युद्धकोष के लिए धनराशि ली जाने लगी। किसानों के लिए यह अतिरिक्त भार असहनीय था । किसान राजकीय अत्याचारों से परेशान होने लगे।
- मेवाड़ राज्य के बिजौलिया में किसान आंदोलन की कहानियां पूरे राजस्थान में व्याप्त हुई । अप्रैल 1922 में बिजौलिया की सीमा से जुड़े बूँदी राज्य के 'बराड़' क्षेत्र के पीड़ित किसानों ने आंदोलन प्रारम्भ कर दिया। इसीलिए इस आंदोलन को बरड़ किसान आंदोलन भी कहते हैं । किसानों को राजस्थान सेवा संघ का मार्गदर्शन प्राप्त था।
- किसानों ने राज्य की सरकार को अनियमित लाग, बेगार व भेंट आदि देना बंद कर दिया। आंदोलन का नेतृत्व 'राजस्थान सेवा संघ' के कर्मठ कार्यकर्ता 'नयनू राम शर्मा कर रहे थे। इनके नेतृत्व में डाबी नामक स्थान पर किसानों का एक सम्मेलन बुलाया।
- राज्य की ओर से बातचीत द्वारा किसानों की समस्याओं एवं शिकायतों को दूर करने के लिए कई प्रयास हुए, किन्तु वे विफल हो गए। तब राज्य की सरकार ने दमनात्मक नीति अपनाना शुरू किया

कला एवं संस्कृति

अध्याय – I

राजस्थान की स्थापत्य कला, किले स्मारक इत्यादि

महल एवं हवेलियाँ

किले :-

गागरौन का किला :

- वर्तमान झालावाड़ जिले में काली सिंध एवं आहू नदियों के किनारे स्थित है।
- गागरोण का किला एक जलदुर्ग है।
- इसका निर्माण डोड परमार शासकों ने करवाया था, इसलिए इसे ' डोडगढ़ ' एवं 'धूलरगढ़' भी कहते हैं।
- देवेन सिंह खिंची ने बीजलदेव डोड को हराकर इस पर अधिकार कर लिया था।

जैत्रसिंह :

- 1303 में जैत्रसिंह के समय अलाउद्दीन ने आक्रमण किया था।
- संत हमीदुद्दीन चिश्ती जैत्रसिंह के समय गागरौन आए थे, जिन्हें हम 'मीठे साहेब' के नाम से जानते हैं। इनकी दरगाह गागरौन के किले में बनी हुई है।

प्रताप सिंह :

- इन्हें हम संत पीपा के नाम से जानते हैं। इनके समय में फिरोज तुगलक ने गागरोण पर विफल आक्रमण किया था। संत पीपा की छत्तरी गागरौन में बनी हुई है।

अचलदास :

- 1423 ई. में मालवा का सुल्तान होशंगशाह गागरौन पर आक्रमण करता है। इस समय गागरौण के किले का पहला साका होता है।
- अचलदास खिंची अपने साथियों के साथ लड़ता हुआ मारा जाता है।
- लाला मेवाड़ी के नेतृत्व में जौहर किया जाता है।
- अचलदास खिंची की अन्य रानी का नाम : उमा सांखला (जांगलू)।
- शिवदास गाड़ण ने 'अचलदास खिंचीरी वचनिका' नामक ग्रंथ लिखा है।

पाल्हण सिंह (अचलदास का पुत्र, कुम्भा का भांजा) :

- 1444 ई. में मालवा का सुल्तान महमूद खिलजी गागरौन पर आक्रमण करता है।
- कुम्भा अपने सेनानायक धीरज देव को भेजकर पाल्हण सिंह की सहायता करता है। इस समय गागरौण के किले का दुसरा साका होता है। महमूद खिलजी ने गागरौण का नाम मुस्तफाबाद रख दिया था। (महासिरे मुहम्मदशाही में इसका जिक्र है)।
- बाद में गागरौन का किला महाराणा सांगा (मेवाड़) के अधिकार में आ गया था।
- सांगा ने अपने मित्र मेदिनी राय (चन्देरी) को यह किला दे दिया।
- 1567-68 ई. के चित्तौड़ आक्रमण के समय अकबर इसके किले में ठहरता है और फैजी इससे मुलाकात करता है।
- बाद में अकबर ने यह किला पृथ्वीराज राठौड़ को दे दिया। पृथ्वीराज राठौड़ ने इसी किले में 'बेलिक्रिसण रुक्मिणी' की रचना की।
- शाहजहाँ ने यह किला कोटा महाराजा माधोसिंह को दे दिया था। कोटा महाराजा दुर्जनसाल ने यहाँ मधुसूदन का मंदिर बनाया।
- जालिमसिंह झाला ने यहाँ जालिम कोट (परकोटा) का निर्माण करवाया।
- औरंगजेब ने यहा बुलन्द दरवाजे का निर्माण करवाया।
- इस किले में एक जौहर कुण्ड है, अंधेरी बावड़ी, गीध कढ़ाई (यहाँ राजनैतिक ऊंची पहाड़ी पर बंदियों को सजा दी जाती थी) है।
- गागरौन का किला बिना नींव के (चट्टानों पर) खड़ा है। कोटा राज्य की टकसाल यहीं पर थी।

चितौड़गढ़ का किला :

- दुर्गों का सिरमौर
- दुर्गों का तीर्थस्थल
- राजस्थान का गौरव
- इस किले का निर्माण चित्रांगद मौर्य ने किया था। (कुमारपाल प्रबन्ध के अनुसार)।
- 734 ई. में बप्पा रावल ने मान मौर्य को हराकर चित्तौड़ के किले पर अधिकार कर लिया।

- 1559 ई. में उदयपुर की स्थापना तक चित्तौड़ मेवाड़ की राजधानी रहा है। यह राजस्थान का सबसे बड़ा आवासीय किला है।
- चित्तौड़ के किले में तीन साके हुए : 1303 में द्वारा रतनसिंह के समय : अलाउद्दीन। 1534 में द्वारा कर्मावती के समय : बहादुरशाह। 1568 में उदयसिंह के समय : अकबर।
- कुम्भा ने कुम्भा स्वामी का मंदिर, श्रृंगार चंवरी का मंदिर बनवाया।
- मोकल ने समिद्धेश्वर मंदिर का पुनर्निमाण करवाया।
- बनवीर ने नवलखा भण्डार बनवाया।
- बनवीर ने तुलजा भवानी का मंदिर बनवाया।
- चित्तौड़ के किले में रत्नेश्वर तालाब, भीमलव तालाब, मीरा मंदिर, कालिका मंदिर, लाखोटा बारी आदि प्रमुख हैं।
- चित्तौड़ का किला मेसा पठार पर मीनाकृति में बना हुआ है। धान्वन दुर्ग को छोड़कर इसमें अन्य सभी विशेषताएँ हैं।
- यह किला गम्भीरी एवं बेड़च नदियों के किनारे बसा हुआ है।
- महाराणा कुम्भा ने इसमें 7 दरवाजे बनवाए।
- कुम्भा ने इसमें 'विजय स्तम्भ' (कीर्ति स्तम्भ) का निर्माण करवाया।
- चित्तौड़ के किले में एक जैन कीर्ति स्तम्भ बना हुआ है।
- यह राजस्थान की प्रथम इमारत है जिस पर 15 अगस्त 1949 को एक रुपये का डाक टिकट जारी किया गया।

कुम्भलगढ़ का किला :

- महाराणा कुम्भा ने 1448 ई. से 1458 ई. के बीच इसका निर्माण करवाया।
- कुम्भलगढ़ का वास्तुकार 'मण्डन' था।
- कुम्भलगढ़ वर्तमान राजसमंद जिले में स्थित है।
- कुम्भलगढ़ के किले को मेवाड़-मारवाड़ का सीमा प्रहरी कहते हैं।
- अत्यधिक ऊंचाई पर बना हुआ होने के करण अबुल फजल ने कहा था कि इस किले को नीचे से ऊपर की ओर देखने पर पगड़ी गिर जाती है।
- कुम्भलगढ़ के शीर्ष भाग में कटारगढ़ बना हुआ है जो कुम्भा का निजी आवास था। कटारगढ़ को 'मेवाड़ की आँख' कहते हैं।
- कुम्भलगढ़ के किले में उदय ने कुम्भा की हत्या (मामादेव कुण्ड के पास) की थी।
- उड़वा राजकुमार पृथ्वीराज की छत्तरी बनी हुई है। (12 खम्भों की)।
- पन्नाधाय उदयसिंह को लेकर कुम्भलढ़ के किले में आयी थी, उदयसिंह का राजतिलक यहीं हुआ था।
- महाराणा प्रताप ने भी अपना शुरूआती शासन कुम्भलगढ़ से चलाया था।
- कुम्भलगढ़ के किले को मेवाड़ शासकों की 'संकटकालीन राजधानी' कहते हैं।
- कुम्भलगढ़ के किले में भी कुम्भा स्वामी का मंदिर बना हुआ है।
- इसी किले में झाली रानी का महल बना हुआ है।
- कुम्भलगढ़ के दीवार की लम्बाई : 36 कि.मी. और चौड़ाई इतनी है कि आठ घोड़े समानान्तर दौड़ सकते हैं।
- कर्नल जेम्स टॉड ने इसकी तुलना 'यूरोप के एट्रस्कन' (सुदृढ़ प्राचीर, बुर्ज एवं कंगरो के कारण) से की।

रणथम्भौर दुर्ग :

- वर्तमान में सवाई माधोपुर में स्थित है।
- 8वीं शताब्दी में चौहान शासकों द्वारा निर्मित।
- अण्डाकार आकृति में निर्मित है।
- गिरि एवं वन दोनों दुर्गों की विशेषता रखता है।
- अबुल फजल : बाकी सब किले नंगे है पर रणथम्भौर दुर्ग बख्तरबंद है।
- हम्मीर के समय जलालुद्दीन खिलजी ने यहाँ एक विफल आक्रमण किया था।
- इस विफलता के बाद खिलजी ने कहा था : ऐसे 10 किलों को में मुसलमान के एक बाल के बराबर भी नहीं समझता।
- 1301 ई. : अलाउद्दीन ने रणथम्भौर किले पर आक्रमण किया। उस समय रणथम्भौर का पहला साका हम्मीर के नेतृत्व में हुआ।
- रणथम्भौर का किला हम्मीर हठ के लिए प्रसिद्ध है।
- इस किले में : जोगी महल, सुपारी महल, रणत भंवर (गणेश जी का मंदिर : शादी की पहली कुमकुम पत्री यहाँ भेजी जाती है), पदम तालाब, जौंरा-भौंरां महल, पीर सदरुद्दीन की दरगाह स्थित हैं।
- अकबर कालीन टकसाल यहाँ स्थित है।

- धौलपुर के सिक्को को 'तमंचाशाही' कहते हैं।
- धौलपुर का कमलबाग जिसका जिक्र बाबर की आत्मकथा बाबरनामा में किया गया है।
- राजस्थान, मध्यप्रदेश एव उत्तरप्रदेश की सीमाओं पर स्थित है ।

कोटा का किला :

- जैत्रसिंह (बूंदी का राजा) ने यहाँ एक 'गुलाब महल' का निर्माण करवाया था।
- कालान्तर में माधोसिंह ने इसे कोटा के किले के रूप में विकसित किया।
- जेम्स टॉड के अनुसार इस किले का परकोटा आगरा के किले के बाद सबसे बड़ा है।
- झाला हवेली : भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध ।

कांकणबाड़ी का किला :

- अलवर जिले में स्थित, मिर्जा राजा जयसिंह ने इस किले का निर्माण करवाया था।
- औरंगजेब के द्वारा शिकोह (बड़े भाई) को यहाँ बंधक बना कर रखा था।

शाहबाद का किला :

- बारां जिले में स्थित मुकुटमणि देव चौहान ने इसका निर्माण करवाया था।
- शेरशाह सूरी अपने कालिंजर अभियान के दौरान इस पर अधिकार कर इसका नाम 'सलीमाबाद' कर दिया।
- इसमें 'बादल महल' बना हुआ है। और इसमें नवलवान तोप भी रखी हुयी है।

चौमू का किला :

- जयपुर जिले में स्थित है।
- इसे धारधारागढ़, रघूनाथगढ़, चौमुहागढ़ भी कहते हैं ।
- इसका निर्माण करणसिंह ने करवाया था।
- इसमें एक हवा मंदिर (आतिथ्य स्वागत) बना हुआ है।

दौसा का किला :

- देवगिरी पहाड़ी पर बना हुआ है।
- छाजले की आकृति का बना हुआ है।
- दौसा कच्छवाहों की पहली राजधानी थी।

माधोराजपुरा का किला :

- जयपुर जिले में स्थित है। (फागी तहसील के पास)
- जयपुर महाराजा सवाई माधोसिंह प्रथम ने मराठों पर जीत के उपलक्ष में बनवाया था।
- यह किला कच्छवाहों की नरूका शाखा के अधीन रहा था।
- यहाँ अमीर खां पिण्डारी की बेगमों को बंधक बना कर रखा।

फतेहपुर का किला :

- सीकर जिले में स्थित है।
- 1453 ई. में फतेहपुर में नवाब फतेह खाँ कायमखानी ने निर्माण करवाया था।
- पीर निजामुद्दीन की दरगाह बनी हुई है।
- बीकानेर के राजा लूणकरण ने यहाँ आक्रमण किया था।
- सरस्वती पुस्तकालय : फतेहपुर

नीमराणा का किला :

- अलवर जिले में स्थित है। इसे पंचमहल भी कहते हैं।
- इसका निर्माण 1464 ई. में चौहान शासकों द्वारा करवाया था ।

कुचामन का किला :

- नागौर जिले में स्थित है।
- इसका निर्माण में इतिया शासक जालिम सिंह ने करवाया था । इसे 'जागीरी किलो का सिरमौर' भी कहते हैं।

नागौर का किला :

- इसका निर्माण चौहान शासक सोमेश्वर के सामन्त कैमास ने करवाया था।
- इसे 'अहिच्छत्रगढ़' दुर्ग भी कहते हैं ।
- अमरसिंह राठौड़ की 16 खम्भों की छतरी की वीरता के लिए प्रसिद्ध है।
- इसे 2013 का 'आगा खाँ अवॉर्ड' दिया गया है।

भैंसरोड़गढ़ का किला :

- एक व्यापारी द्वारा निर्मित।
- चम्बल एवं बामनी नदियों के संगम पर चित्तौड़गढ़ जिले में स्थित है।
- इसे 'राजस्थान का वेल्लोर' कहते हैं। (जलदुर्ग)

मालकोट का किला :

- मेड़ता (नागौर) के किले को मालकोट का किला कहते हैं ।
- **निर्माण** : मालदेव ने।

मोहनगढ़ का किला :

- जैसलमेर जिले में स्थित है।
- **निर्माण** : जैसलमेर महाराजा जवाहर सिंह के समय ।

- बादल महल डूंगरपुर
- उदयविलास महल डूंगरपुर
- एक थाम्बिया महल डूंगरपुर

चित्तौड़गढ के प्रमुख महल

- फतेह प्रकाश महल चित्तौड़गढ़
- गोरा बादल के महल चित्तौड़गढ
- राणा कुम्भा महल चित्तौड़गढ
- खातर महल चित्तौड़गढ

कोटा के प्रमुख महल

- गुलाब महल कोटा
- छत्रविलास का जगमंदिर महल कोटा
- कोटा का हवामहल कोटा
- अमलामीणी/अबलामीणी का महल कोटा :- इस महल का निर्माण कोटा के राव मुकुंदसिंह ने इनकी चहेती पासवान अमली मीणी के लिए करवाया था। इसे 'राजस्थान का दूसरा या छोटा ताजमहल' भी कहा जाता है। कर्नल जेम्स टॉड ने कहा।
- रावठा महल दर्रा अभयारण्य (कोटा झालावाड)
- जगमोहन महल कोटा अभेड़ा महल कोटा :- कोटा के पास चम्बल नदी के किनारे स्थित ऐतिहासिक महल जिसे राज्य सरकार पर्यटक केन्द्र के रूप में विकसित कर रही है।

झालावाड के प्रमुख महल

- काठ का रेन बसेरा महल झालावाड
- काष्ठप्रासाद (महल) झालावाड
- जोगी महल सवाईमाधोपुर

भरतपूर के प्रमुख महल

- डीग के महल भरतपुर :- सर्वप्रथम 1725 ई. में राजा बदनसिंह ने डीग महल का निर्माण करवाया था।
  इसके बाद डीग के जलमहल का निर्माण भरतपुर के जाट राजा सूरजमल ने 1755 से 1765 ई. के बीच में करवाया।
- नंदभवन भरतपुर
- ढिपोडी महल भरतपुर
- मृगया महल बयान
- सावन भादो महल डीग (भरतपुर)
- गोपाल महलडीग (भरतपुर)
- सूरज महल भरतपुर

अलवर के प्रमुख महल

- हवा बंगला अलवर
- विजय मंदिर महल अलवर
- अलवर पैलेस (सिटी पैलेस) अलवर
- विनय विलास महल अलवर

जयपुर के प्रमुख महल

हवामहल जयपुर :- 1799 ई. में सवाई प्रतापसिंह ने इस पाँच मंजिल की भव्य इमारत का निर्माण करवाया। इस इमारत को उस्ताद लालचद कारीगर ने बनाया था। वर्तमान में इसे राजकीय संग्रहालय के रूप में परिवर्तित कर दिया गया है।

- जयनिवास महल जयपुर
- मुबारक महल जयपुर :- सिटी पैलेस में स्थित मुबारक महल का निर्माण सवाई माधोसिंह (1840 से 1922 ई.) ने करवाया था।
- आमेर का महल जयपुर :- आमेर की मावठा झील के पास की पहाड़ी पर स्थित, कछवाहा राजा मानसिंह द्वारा 1592 ई. में निर्मित यह महल हिन्दु-मुस्लिम शैली के समन्वित में बना हुआ है ।
  सामोद महल जयपुर सिसोदिया रानी का बाग महल जयपुर :- सवाई जयसिंह द्वितीय की महारानी सिसोदिया ने 1779 में इसका निर्माण करवाया।
- जलमहल जयपुर :- जयपुर से आमेर के मार्ग पर आमेर की घाटी के नीचे 'जयसिंहपुरा खोर' गाँव के ऊपर दो पहाड़ियों के बीच तंग घाटी को बांधकर एवं 'कनक वृन्दावन' एवं 'फूलों की घाटी' के पास स्थित जलमहल (मानसागर झील) का निर्माण जयपुर के मानसिंह द्वितीय ने करवाया था। सवाई प्रताप सिंह ने सन् 1799 में इसका निर्माण मानसागर तालाब के रूप में करवाया था।
- शीशमहल जयपुर :- 'दीवाने खास' नाम से प्रसिद्ध आमेर स्थित जयमन्दिर (मिर्जा राजा जयसिंह द्वारा निर्मित) एवं जस (यश) मंदिर जो चूने और गज मिट्टी से बनी दीवारों और छतों पर जामिया कांच या शीशे के उत्तल टुकड़ों से की गयी सजावट के कारण शीशमहल कहलाते हैं। महाकवि बिहारी ने इस महल को दर्पण धाम कहा था ।

अध्याय – 2

राजस्थान के मेले एवं त्यौहार

अजमेर के मेले

- **पुष्कर मेला** - यह मेला पुष्कर (अजमेर) में कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक भरता है। यह राजस्थान का सबसे बड़ा सांस्कृतिक मेला/ सबसे बड़ा रंगीन/रंग बिरंगा / सर्वाधिक विदेशी पर्यटकों का आगमन वाला मेला है। ख्वाजा साहब का उर्स - यह उर्स अजमेर में रज्जब माह की । से 6 तारीख तक भरता है। अढ़ाई दिन के झोपड़े में ।
- **कल्पवृक्ष मेला** - यह मेला मांगलियावास (अजमेर) में श्रावण मास की हरयाली अमावस्या को भरता है।
- **कार्तिक पशु मेला** - यह पशु मेला पुष्कर (अजमेर) में कार्तिक शुक्ल 8 से मार्गशीर्ष 2 तक भरता है।

अलवर के मेले

- **चंद्र प्रभु मेला** - यह मेला तिजारा, अलवर में फाल्गुन शुक्ला सप्तमी व श्रावण शुक्ला दशमी को भरता है।
- **नारायणी माता का मेला** - यह मेला बरवा डूंगरी सरिस्का (अलवर) में वैशाख शुक्ल एकादशी को भरता है।

हनुमानजी का मेला - यह मेला पांडुपोल (अलवर) में भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी एवं पंचमी को भरता है।

- **भृर्तहरि मेला** - यह मेला भृर्तहरि (महान योगी भृर्तहरि की तपो भूमि) पर अलवर में भाद्रपद शुक्ला अष्टमी को भरता है। यह कनफटे नाथों की तीर्थस्थली है ।
- **बिलारी माता मेला** - बिलारी माता का यह मेला बिलारी (अलवर) में चैत्र शुक्ला अष्टमी को भरता है।

बाड़मेर के मेले

- **रणछोड़राय का मेला** - यह मेला बाड़मेर जिले के खेड़ क्षेत्र में प्रतिवर्ष राधाष्टमी, माघ पूर्णिमा, बैशाख एवं श्रावण मास की पूर्णिमा व कार्तिक पूर्णिमा भादवा सुदी चतुर्दशी को भरता है।
- **मल्लीनाथ पशु मेला** - यह मेला बाड़मेर जिले के तिलवाड़ा क्षेत्र में चैत्र कृष्णा एकादशी से चैत्र शुक्ला एकादशी तक भरता है।
- **हल्देश्वर महादेव शिवरात्रि मेला** - यह मेला बाड़मेर जिले के पीपलूद (छप्पन की पहाड़ियों के बीच यह मारवाड़ का लघु माउन्ट आबू है।) में शिवरात्रि के अवसर पर भरता है।
- **रानी भटियाणी का मेला** - यह मेला बाड़मेर जिले के जसोल क्षेत्र में कार्तिक वदी पंचमी को भरता है।
- **नाकोड़ाजी का मेला** - यह मेला बाड़मेर जिले के नाकोड़ा तीर्थ मेवानगर में पोष कृष्ण दशमी को भरता है।
- **बज्रंग पशु मेला** - यह मेला बाड़मेर जिले के सिणधरी क्षेत्र में मंगसर वदी तृतीया को भरता है।

बीकानेर जिले के मेले

- **निर्जला ग्यारस मेला** - यह मेला बीकानेर जिले के लक्ष्मीनाथ मंदिर में ज्येष्ठ सुदी एकादशी को भरता है।
- **जम्भेश्वर मेला** - यह मेला बीकानेर जिले के मुकाम-तालवा (नोखा) में वर्ष में दो बार - फाल्गुन व आश्विन अमावस्या को भरता है।
- **नागणेची माता का मेला** - यह मेला बीकानेर जिले में नवरात्रा के अवसर पर भरता है।
- **चनणी चेरी मेला (सेवकों का मेला)** - यह मेला बीकानेर जिले के देशनोक में फाल्गुन शुक्ल सप्तमी को भरता है।
- **कपिल मुनि का मेला** - यह मेला बीकानेर जिले के श्री कोलायत जी में कार्तिक पूर्णिमा को भरता है।
- **करणी माता का मेला** - यह मेला देशनोक (बीकानेर) में नवरात्रा (कार्तिक एवं चैत्र माह में) में भरता है।

बांसवाड़ा जिले के प्रमुख मेले

- **घोटिया अम्बा मेला** - यह मेला बांसवाड़ा जिले के घोटिया (बारीगामा) नामक स्थान पर चैत्र अमावस्या को (जिले का सबसे बड़ा ग्रामीण मेला) भरता है।

- ***कल्लाजी का मेला*** - *यह मेला बांसवाड़ा जिले के गोपीनाथ का गढ़ा नामक स्थान पर आश्विन सुदी नवरात्रि प्रथम रविवार को भरता है।*
- ***अंदेश्वर मेला*** - *यह मेला बांसवाड़ा जिले के अंदेश्वर में कार्तिक पूर्णिमा को भरता है।*
- ***गोपेश्वर मेला*** - *यह मेला बांसवाड़ा जिले के घाटोल के निकट कार्तिक पूर्णिमा को भरता है।*
- ***मानगढ़ धाम मेला (आदिवासियों का मेला)*** - *यह मेला बांसवाड़ा के आनंदपुरी के निकट मानगढ़ धाम में मार्गशीर्ष पूर्णिमा को भरता है।*

चूरू जिले के मेले

- ***भभूता सिद्ध का मेला*** - *यह मेला चूरू जिले के चंगोई (तारानगर) में भादवा सुदी सप्तमी को भरता है।*
- ***गोगा जी का मेला*** - *यह मेला चूरू जिले के ददरेवा गांव में भाद्रपद कृष्णा नवमी (गोगानवमी) को भरता है।*
- ***सालासर बालाजी का मेला*** - *यह मेला चूरू जिले के सालासर (सुजानगढ़) में चैत्र व कार्तिक पूर्णिमा को भरता है।*

बारां जिले के मेले

- ***सीताबाड़ी का मेला (धार्मिक व पशु मेला)*** - *यह मेला बारां जिले के सीताबाड़ी, केलवाड़ा (सहरिया जनजाति का कुम्भ) नामक स्थान पर ज्येष्ठ अमावस्या (इस मेले में सहरियाओं का स्वयंवर होता है) को भरता है।*
- ***डोल मेला*** - *यह मेला बारां जिले के डोल तालाब पर जलझूलनी एकादशी (भाद्रपद शुक्ला एकादशी) को भरता है। इसमें देवविमानों सहित शोभायात्रा निकलती है।*
- ***ब्रह्माणी माता का मेला*** - *यह मेला बारां जिले के सोरसन में भरता है। यहां पर गधों का मेला भी लगता है।*
- ***फूलडोल शोभा यात्रा महोत्सव (श्रीजी का मेला)*** - *यह मेला बारां जिले के किशनगंज में होली (फाल्गुन मास की पूर्णिमा) के दिन भरता है।*
- ***कपिल धारा का मेला*** - *यह मेला सहरिया क्षेत्र (बारां) में कार्तिक पूर्णिमा को भरता है।*

भरतपुर के मेले

- ***गंगा दशहरा मेला*** - *यह मेला भरतपुर जिले के कामां क्षेत्र में ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमी से द्वारदशी तक भरता है।*
- ***बसंती पशु मेला*** – *यह मेला माघ अमावस्या से शुक्ल पंचमी तक भरता है ।*
- ***गरुड़ मेला*** - *यह मेला भरतपुर जिले के बंशी पहाड़पुर में कार्तिक शुक्ल तृतीया को भरता है।*
- ***भोजन बारी/भोजन थाली परिक्रमा*** – *भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा को कामा में भरता है ।*
- ***जसवंत पशु मेला*** - *यह मेला भरतपुर जिले में अश्विन शुक्ल पंचमी से पूर्णिमा तक भरता है।*
- ***बृज महोत्सव*** – *यह मेला द्वादशी से माघ शुक्ल – डीग भरतपुर में भरता है ।*

जयपुर के मेले

- ***गणगौर मेला*** - *गणगौर मेला जयपुर में चैत्र शुक्ला तीज व चौथ को भरता है।*
- ***बाणगंगा मेला*** - *यह विराटनगर, जयपुर में वैशाख पूर्णिमा को भरता है।*
- ***शीतलामाता का मेला*** - *यह मेला चाकसू, जयपुर में चैत्र कृष्ण अष्टमी को भरता है।*
- ***गधों का मेला*** - *आश्विन कृष्ण सप्तमी से आश्विन कृष्ण एकदशी तक लुनियावास (सांगानेर) गांव में भरता है।*
- ***तीज की सवारी एवं मेला*** - *यह जयपुर में श्रावण शुक्ला तृतीया को आयोजित होता है।*

भीलवाड़ा के मेले

- ***सवाई भोज का मेला*** - *यह मेला भीलवाड़ा जिले के आसींद में सवाई भोज स्थान पर भाद्रपद शुक्ल अष्टमी को भरता है।*
- ***फूलडोल का मेला (रामस्नेही सम्प्रदाय)*** - *यह मेला भीलवाड़ा जिले के रामनिवास धाम (रामद्वारा) में चैत्र कृष्णा प्रतिपदा से पंचमी तक भरता है।*
- ***तिलस्वां महादेव मेला*** - *यह मेला भीलवाड़ा जिले के तिलस्वां (मांडलगढ़) में शिवरात्रि फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी के अवसर पर भरता है।*
- ***सौरत (त्रिवेणी) का मेला*** - *यह मेला भीलवाड़ा जिले के त्रिवेणी संगम सौरत(मेनाल, मांडलगढ़) में शिवरात्रि के पर्व पर आयोजित होता है।*

राजस्थानी भाषा

अध्याय – I

राजस्थान की क्षेत्रीय बोलियाँ

राजस्थानी भाषा-

- वक्ताओं की दृष्टि से भारतीय भाषाओं में राजस्थानी भाषा का 7 वां स्थान तथा विश्व की भाषाओं में राजस्थानी भाषा का 16वां स्थान है।
- उद्योतन सुरी ने 8वीं शताब्दी में अपने ग्रंथ कुवलयमाला में 18 देशी भाषाओं में मरु भाषा को भी सम्मिलित किया था।

उद्भव-

- डॉ. एल. पी. टेस्सीटोरी राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति शौरसेनी गुर्जर अपभ्रंश से मानते हैं ।
- डॉ. जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन एवं डॉ. पुरुषोत्तम मोनारिया राजस्थानी भाषा का उद्भव (उत्पत्ति) नागर अपभ्रंश से मानते हैं ।
- के. एम. मुंशी एवं मोतीलाल में नारिया राजस्थानी भाषा का उद्भव (उत्पत्ति) गुर्जर अपभ्रंश से मानते हैं।
- अधिकांश विद्वान राजस्थानी भाषा का उद्भव (उत्पत्ति) गुर्जर अपभ्रंश से मानते हैं ।

उत्पत्ति काल-

- राजस्थानी भाषा का उत्पत्ति काल 12 वीं सदी का अन्तीम चरण माना जाता है।

स्वतंत्र अस्तीत्व-

- अपभ्रंश के मुख्यतः तीन रूप नागर, ब्राचड़ और उपनागर माने जाते हैं। नागर के अपभ्रंश से सन् 1000 ई. के लगभग राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति हुई।
- राजस्थानी एवं गुजराती भाषा का मिला जुला रूप 16 वीं सदी के अंत तक चलता रहा है।
- 17 वीं सदी के अंत तक आते आते राजस्थानी पूर्णत एक स्वतंत्र भाषा का रूप ले चुकी थी।

राजस्थानी भाषा का वर्गीकरण-

I. सर जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन का वर्गीकरण-

- सरजॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन अपनी पुस्तक या ग्रंथ लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया के 9वें खण्ड में सन् 1912 में राजस्थानी भाषा का स्वतंत्र भाषा के रूप में वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करने वाले प्रथम व्यक्ति थे।
- राजस्थानी भाषा या राजस्थानी बोलियों का पहली बार वैज्ञानिक अध्ययन जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने किया था।
- सरजॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने राजस्थानी भाषा को 5 बोलियों में वर्गीकृत किया है जैसे-

1. पश्चिमी राजस्थानी बोली (मारवाड़ी)-
2. उत्तरी-पूर्वी राजस्थानी बोली-
3. मध्यपूर्वी राजस्थानी बोली
4. दक्षिण-पूर्वी राजस्थानी बोली
5. दक्षिणी राजस्थानी बोली

पश्चिमी राजस्थान की प्रमुख बोलियां –

मारवाड़ी बोली-

- मारवाड़ी बोली का प्राचीन नाम मरुभाषा है ।
- मारवाड़ी बोली के साहित्यिक रूप को डिंगल कहते हैं।
- मारवाड़ी बोली का उद्भव (उत्पत्ति) गुर्जर अपभ्रंश से हुआ है ।
- मारवाड़ी बोली का उत्पत्ति काल 8 वीं सदी है।
- मारवाड़ी बोली पर सर्वाधिक प्रभाव गुजराती भाषा का रहा है ।
- मारवाड़ी बोली राजस्थान की प्राचीनतम बोली मानी जाती है ।
- मारवाड़ी बोली पश्चिमी राजस्थान की प्रधान या प्रमुख बोली है।
- मारवाड़ी बोली राजस्थान में सर्वाधिक क्षेत्रों में बोले जाने वाली बोली है ।
- जैन साहित्य एवं मीरा की अधिकांश पद इसी भाषा में लिखे गए है ।
- राजिये रा सोरठा, वेलि किसन रुकमणी री, ढोला-मारवण, मूमल आदि लोकप्रिय काव्य मारवाड़ी भाषा में ही रचित है।
- विशुद्ध मारवाड़ी (पुरी शुद्ध मारवाड़ी) बोली राजस्थान में जैसलमेर, बीकानेर, पाली, नागौर, जालौर , सिरोही, शेखावाटी, जोधपुर, व जोधपुर के आस-पास के क्षेत्रों में बोली जाती है।
- मारवाड़ी की उपबोलियां-

1. गौड़वाड़ी
2. देवड़ावाटी
3. थली
4. शेखावटी

गौड़वाड़ी-

- मेवाती बोली राजस्थान में अलवर, भरतपुर, धौलपुर, तथा करौली के पूर्वी भाग में बोली जाती हैं।
- मेवाती बोली ब्रजभाषा से प्रभावित हैं।
- संत लालदास एवं चरणदास ने सम्प्रदायों का साहित्य की रचना मेवाती भाषा में की थी ।
- चरणदास की शिष्याएं दयाबाई व सहजोबाई की रचनायें भी मेवाती भाषा में हैं ।
- मेवाती बोली की उपबोली राठी, मेहण, कठेर हैं।
- मेवाती बोली पश्चिमी हिन्दी व राजस्थानी भाषा के मध्य सेतु (पुल) का कार्य करने वाली बोली है ।

राजस्थानी ब्रज-

- राजस्थानी ब्रजबोली दिल्ली, उत्तर प्रदेश की सीमा से लगने वाले अलवर, भरतपुर, करौली व धौलपुर जिलों में बोली जाती हैं।

पंजाबी-

- पंजाबी बोली राजस्थान के श्रीगंगानगर व हनुमानगढ़ जिलों में बोली जाती हैं।

सीताराम लालस-

- पद्म श्री सीताराम लालास ने राजस्थानी भाषा का शब्दकोश बनाया इस शब्दकोश में 2 लाख से अधिक शब्द हैं।
- मारवाड़ी भाषा का प्रथम व्याकरण रामकरण आसोपा ने लिखा था ।

अध्याय – 2

प्रमुख राजस्थानी कृतियाँ एवं प्रमुख राजस्थानी साहित्यकार

राजस्थानी साहित्य की प्रमुख रचनाएः-

1) ग्रंथ एवं लेखक पृथ्वीराज रासौ (कवि चन्द्र बरदाई):- इसमें अजमेर के अन्तिम चौहान सम्राट-पृथ्वीराज चौहान तृतीय के जीवन चरित्र एवं युद्धों का वर्णन किया गया है | यह पिंगल में रचित वीर रस का महाकाव्य है। माना जाता है कि चन्द बरदाई पृथ्वीराज चौहान का दरबारी कवि एवं मित्र था।

2) **खुमाण रासौ** (दलपत विजयः- पिंगल भाषा के इस ग्रंथ में मेवाड़ के बप्पा रावल से लेकर महाराजा राजसिंह तक के मेवाड़ शासकों का वर्णन है।

3) विरद छतहरी, किरतार बावनौ (कवि दुरसा आढ़ा):- विरद छतहरी महाराणा प्रताप की शौर्य गाथा है और किरतार बावनौ में उस समय की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति को बतलाया गया है दुरसा आढ़ा अकबर के दरबारी कवि थे। इनकी पीतल की बनी मूर्ति अचलगढ़ के अचलेश्वर मंदिर में विद्यमान है।

4) बीकानेर रां राठौड़ा री ख्यात (दयालदास सिंढायच):- दो खंडो के ग्रंथ में जोधपुर एवं बीकानेर के राठौड़ों के प्रारंभ से लेकर बीकानेर के महाराजा सरदार सिंह के राज्यभिषेक तक की घटनाओं का वर्णन है।

5) सगत रासौ (गिरधर आसिया) मनु प्रकाशन:- इस डिंगल ग्रंथ में महाराणा प्रताप के छोटे भाई शक्तिसिंह का वर्णन है। यह 943 छंदों का प्रबंध काव्य है। कुछ पुस्तकों में इसका नाम सगतसिंह रासौ भी मिलता है।

6) हम्मीर रासौ (जोधराज):- इस काव्य ग्रंथ में रणथम्भौर शासक राणा चौहान की वंशावली व अलाउद्दीन खिलजी से युद्ध एवं उनकी वीरता आदि का विस्तृत वर्णन है।

7) पृथ्वीराज विजय (जयानक):- संस्कृत भाषा के इस काव्य ग्रंथ में पृथ्वीराज चौहान के वंशक्रम एवं उनकी उपलब्धियों का वर्णन किया गया है।

इसमें अजमेर के विकास एवं परिवेश की प्रामाणिक जानकारी हैं ।

8) अजीतोदय (जगजीवन भट्ट):-मुगल संबंधों का विस्तृत वर्णन हैं। यह संस्कृत भाषा में हैं ।

9) ढोला मारू रा दूहा (कवि कल्लोल):-डिंगल भाषा के श्रृंगार रस से परिपूर्ण इस ग्रंथ में ढोला एवं मारवाणी के प्रेमाख्यान का वर्णन हैं ।

10) गजगुणरूपक (कविया करणीदान):- इसमें जोधपुर के महाराजा गजराज सिंह के राज्य वैभव तीर्थयात्रा एवं युद्धों का वर्णन हैं ।

11) सूरज प्रकास (कविया करणीदान):-इसमें जोधपुर के राठौड़ वंश के प्रारंभ से लेकर महाराजा अभयसिंह के समय तक की घटनाओं का वर्णन हैं । साथ ही अभयसिंह एवं गुजरात के सूबेदार सरबुलंद खां के मध्य युद्ध एवं अभयसिंह की विजय का वर्णन हैं।

12) एकलिंग महात्म्य (कान्हा व्यास):-यह गुहिल शासकों की वंशावली एवं में वाड़ के राजनैतिक व सामाजिक संगठन की जानकारी प्रदान करता हैं ।

13) मूता नैणसी री ख्यात तथा मारवाड़ रा परगना री विगत (मुहणोंत नैणसी):- जोधपुर महाराजा जसवंतसिंह प्रथम के दीवान नैणसी की इस कृति में राजस्थान के विभिन्न राज्यों के इतिहास के साथ-साथ समीपवर्ती रियासतों (गुजरात, काठियावाड़ बघेलखंड आदि) के इतिहास पर भी अच्छा प्रकाश डाला गया हैं। नैणसी को राजपूताने का 'अबुल फजल' भी कहा गया हैं। मारवाड़ रा परगना री विगत को राजस्थान का गजेटियर कह सकते हैं ।

14) पद्मावत (मलिक मोहम्मद जायसी):- 1543 ई. लगभग रचित इस महाकाव्य में अलाउद्दीन खिलजी की मेवाड़ के शासक रावल रतनसिंह की रानी पद्मिनी को प्राप्त करने की इच्छा थी।

15) विजयपाल रासौ (नल्ल सिंह):- पिंगल भाषा के इस वीर-रसात्मक ग्रंथ में विजयगढ़(करौली) के यदुवंशी राजा विजयपाल की दिग्विजय एवं पंग लड़ाई का वर्णन हैं। नल्लसिंह सिरोहिया शाखा का भाट था और वह विजयगढ़ के यदुवंशी नरेश विजयपाल का आश्रित कवि था।

16) नागर समुच्चय (भक्त नागरीदास):-यह ग्रंथ किशनगढ़ के राजा सावंतसिंह (नागरीदास) की विभिन्न रचनाओं का संग्रह हैं सावंतसिंह ने राधाकृष्ण की प्रेमलीला विशयक श्रृंगार रसात्मक रचनाएं की थी।

17) हम्मीर महाकाव्य (नयनचन्द्र सूरि):- संस्कृत भाषा के इस ग्रंथ में जैन मुनि नयनचन्द्र सूरि ने रणथम्भौर के चौहान शासकों का वर्णन किया हैं ।

18) वेलि किसन रुक्मणि री (पृथ्वीराज राठौड़):- सम्राट अकबर के नवरत्नों में से कवि पृथ्वीराज बीकानेर शासक रायसिंह के छोटे भाई तथा 'पीथल' नाम से साहित्य रचना करते थे। इन्होंने इस ग्रंथ में श्रीकृष्ण एवं रुक्मणि के विवाह की कथा का वर्णन किया हैं । दुरसा आढा ने इस ग्रंथ को पाँचवा वेद व 19वाँ पुराण कहा हैं।

19) कान्हड़दे प्रबन्ध (पद्मनाभ):- पद्मनाभ जालौर शासक अखैराज के दरबारी कवि थे । इस ग्रंथ में इन्होंने जालौर के वीर शासक कान्हड़दे एवं अलाउद्दीन खिलजी के मध्य हुए युद्ध एवं कान्हड़दे के पुत्र वीरमदे अलाउद्दीन की पुत्री फिरोजा के प्रेम प्रसंग का वर्णन किया हैं।

20) राजरूपक (वीरभाण) मनु प्रकाशन:- इस डिंगल ग्रंथ में जोधपुर महाराजा अभयसिंह एवं गुजरात के सूबेदार सरबुलंद खाँ के मध्य युद्ध का वर्णन हैं।

21) बिहारी सतसई (महाकवि बिहारी):- मध्यप्रदेश में जन्में कविवर बिहारी जयपुर नरेश मिर्जा राजा जयसिंह के दरबारी कवि थे। ब्रजभाषा में रचित इनका यह प्रसिद्ध ग्रंथ श्रृंगार रस की उत्कृष्ट रचना हैं ।

22) बाँकीदास री ख्यात (बाँकीदास):-जोधपुर के राजा मानसिंह के काव्य गुरू बाँकीदास द्वारा रचित यह ख्यात राजस्थान का इतिहास जानने का स्त्रोत हैं । इनके ग्रन्थों का संग्रह '**बाँकीदास** ग्रंथावली' के नाम से प्रकाशित हैं । इनके अन्य ग्रंथ मानजसोमण्डल व दातार बावनी भी हैं।

23) कुवलमयाला (उद्योतन सूरी):- इस प्राकृत ग्रंथ की रचना उद्योतन सूरी ने जालौर में रहकर 778 ई, के आस-पास की थी जो तत्कालीन

नोट – प्रिय उम्मीदवारों, यहाँ हमने केवल SAMPLE ही दिया है, पूरा टॉपिक नही दिया है। यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये हमारे संपर्क नंबर पर कॉल कीजिए या लिंक पर क्लिक करें। दोस्तों, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी "राजस्थान 3rd Grade Level – I (REET मुख्य परीक्षा)" में पूर्ण संभव मदद करेंगे और आप "INFUSION NOTES" के साथ इस परीक्षा में जरूर सफल होंगे, धन्यवाद।

संपर्क करें – 9694804063, 9887809083, 8233195718, 8504091672

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
REET (लेवल -I, 2)	2021	98 (150 में से)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)

FREE SAMPLE

राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

& Many More Exams like REET, UPSC, SSC Etc.

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

FREE SAMPLE

संपर्क करें- 9887809083, 8233195718, 9694804063, 8504091672

ONLINE ORDER के लिए OFFICIAL WEBSITE	Website- https://bit.ly/l1-3rd-grade-notes
PHONE NUMBER	+918504091672 9887809083 +918233195718 9694804063
TELEGRAM CHANNEL	https://t.me/infusion_notes
FACEBOOK PAGE	https://www.facebook.com/infusion.notes
WHATSAPP करें	https://wa.link/hx3rcz

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO